स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)

लहरों का राजहंस

22वाँ अंक
जुलाई, 2021 - दिसम्बर, 2021

जब टूट रही थी साँसें कोरोना महामारी में,
कराह रहा था गांधीधाम अपनों को खोने के दर्द की बातों से,
तब वरदान मिला कुछ साँसों का,
दीनदयाल पत्तन के वरद् हाथों से,
मानवता के इन कर्मवीरों को कोटि-कोटि नमन हृदयतल की श्रद्धा से ।

07 जुलाई 2021 को, केंद्रीय मंत्री श्री मनसुख मांडविया जी द्वारा रामबाग अस्पताल में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा स्थापित ऑक्सीजन संयंत्र के उद्घाटन का दृश्य ।

दिनांक 19 अक्टूबर 2021 को कंडला बंदरगाह में माननीय केन्द्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग और आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल जी द्वारा ऑयल जेट्टी-8, डोम आकार के स्टोरेज शेड, ट्रकों, वाहनों के लिए पार्किंग प्लाजा और ऑयल जेट्टी क्षेत्र में पाइपलाइन नेटवर्क का आधुनिकीकरण जैसी परियोजनाओं के उद्घाटन समारोह के दृश्य ।

अध्यक्ष महोदय का सन्देश

श्री संजय कुमार मेहता
भा.व.से.
अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

प्रिय साथियों,

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के बाइसवें अंक के माध्यम से पुन: आप सभी से मिलते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। दीनदयाल पत्तन, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सदैव प्रयासरत रहता है और आप सभी के प्रयासों के फलस्वरूप दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन लक्ष्यानुरूप बना हुआ है, इसके लिए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सराहना के पात्र हैं। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण कंडला/गांधीधाम की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की अध्यक्षता के दायित्व को भी श्रेयस्कर ढंग से निभा रहा है और नगर में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालय, नराकास की गतिविधियों में अपना योगदान देकर इसके गठन के उद्देश्य को पूरा करने में अपना सहयोग दे रहे हैं।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने संदर्भाधीन अवधि के दौरान अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के संगठित एवं समर्पित प्रयासों से कई उपलब्धियाँ तथा पुरस्कार एवं सम्मान हासिल किये हैं। दीनदयाल पत्तन पिछले 15 वर्षों से भारत के प्रमुख पत्तनों में प्रथम स्थान पर बना हुआ है। नौभार प्रहस्तन के मामले में वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने निर्धारित लक्ष्य को पार करते हुए 127.10 मिलियन मीट्रिक टन नौभार प्रहस्तन का नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के संगठित प्रयासों से हम आने वाले वर्षों में इस उपलब्धि को और अधिक ऊँचे स्तर तक ले जा पाएंगे और देश की आर्थिक प्रगति में अपने संगठन की ओर से बहुमूल्य योगदान भी कर पाएंगे।

मुझे यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण अपने सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को हर पटल पर सराहा गया है। इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। दीनदयाल पत्तन के अनवरत विकास और उत्कृष्टता को बनाए रखने का संकल्प आप सभी की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है। यह आवश्यक है कि हम सभी एकजुट होकर दीनदयाल पत्तन की समृद्धि, प्रगति और निरंतर विकास में सक्रिय रूप से सहभागी बने। अंत में हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयासों की सराहना करता हूँ और उन्हें बधाई देता हूँ, साथ ही आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने प्रकाशन के उद्देश्य में सफल सिद्ध होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित, जय हिंद।

उपाध्यक्ष महोदय का सन्देश

श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की छमाही हिंदी पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के बाइसवें अंक के माध्यम से पुन: आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद हो रहा है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में हमेशा अग्रणी बने रहने का प्रयास करता रहा है, पत्रिका का प्रकाशन इस प्रयास का एक अभिन्न अंग है। हिंदी गृह पत्रिका के माध्यम से पोर्ट में कार्यरत अधिकारियों एव कर्मचारियों को अपनी रचनाधर्मिता लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का मंच प्राप्त होता है, साथ ही अपना मौलिक साहित्य सृजित करने की प्रेरणा भी मिलती है। पत्रिकाओं को हार्ड कॉपी के बजाय डिजिटल प्रारूप में ई-बुक इत्यादि के रुप में प्रकाशित करने के सरकारी निर्देश के अनुपालन में इस अंक को भी ई-पत्रिका के रुप में प्रकाशित किया जा रहा है। सभी पाठकगण इसे दीनदयाल पोर्ट की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर पढ़ सकते हैं। ई-पत्रिका के रुप में हिंदी पत्रिकाओं की उपलब्धता से इंटरनेट पर हिंदी की विषयवस्तु में अत्यधिक बढ़ोतरी हो सकेगी।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पोर्ट में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। इस कार्य में पोर्ट के अधिकारी और कर्मचारी पहले से ही अपना योगदान करते आ रहे हैं। मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि पोर्ट के कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को समझते हुए सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर देते रहेंगे। इस पत्रिका के माध्यम से पोर्ट के अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को सबके साथ साझा कर सकते हैं और एक-दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं।

मैं, पोर्ट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करूँगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मान्यता प्राप्त हो सके और आने वाले वर्षों में भी पुन: दीनदयाल पत्तन को मंत्रालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो सके। इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिंद,

सचिव महोदय का सन्देश

श्री सी. हरिचंद्रन
सचिव
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के बाइसवें अंक के माध्यम से आप सब के सम्मुख अपनी बात पुन: रखते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की नियमित गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण अंग है जो राजभाषा कार्यान्वयन की गति को तीव्रता प्रदान करती है । आशा है कि पिछले अंको की तरह यह अंक भी आप सभी को अच्छा लगेगा और आप सभी इसे सराहेंगे ।

केंद्र सरकार के पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय होने के नाते दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण भारत सरकार द्वारा लागू सभी नीतियों का अनुपालन करना अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी समझता है और भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन जिम्मेदारीपूर्वक निष्पादित कर रहा है । जैसा कि अवगत है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया है अत: हम सबको अपना कार्य यथासंभव हिंदी में करना चाहिए ताकि संविधान की मूल भावना का पालन हो सके । कहने की आवश्यकता नहीं है कि जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति और तेज होगी और पारदर्शिता आयेगी ।

राजभाषा हिंदी में सरकारी कामकाज को बढ़ावा देने के लिए सरकार की नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की रही है, जिसका अक्षरश: अनुपालन दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में भी हो रहा है । सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में भी कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं । इसके अलावा हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन, नियमित हिंदी प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन के साथ-साथ लेखन आदि के क्षेत्र में रूचि रखने वाले दीनदयाल पत्तन के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के लिए अपनी सृजनात्मक क्षमता का सार्वजनिक स्तर पर प्रदर्शन कर पाने में सहायता हेतु हिंदी गृह पत्रिका का छमाही प्रकाशन भी किया जाता है । इन सब का उद्देश्य दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है । दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता के दायित्व का भी बहुत ही अच्छे ढंग से निर्वहन कर रहा है ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है तथापि इस क्षेत्र में सतत प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है ताकि दीनदयाल पत्तन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में शीर्षतम बिंदु को भी स्पर्श कर सके । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि दीनदयाल पत्तन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने सक्रिय एवं समर्पित प्रयास करेंगे तो यह अवश्य संभव हो सकेगा । मैं आप सभी से अनुरोध करूंगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मूल्यांकन के सभी स्तरों पर मान्यता और सम्मान प्राप्त होता रहे । इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को पुनश्च बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ ।

जय हिन्द,

लहरों का राजहंस

22वाँ अंक
जुलाई 2021–दिसम्बर 2021

मुख्य संरक्षक

श्री संजय कुमार मेहता, भा.व.से.,
अध्यक्ष

संरक्षक

श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष

मार्गदर्शक मंडल

श्री सी. हरिचंद्रन, सचिव
श्री जी.आर.वी. प्रसाद राव, यातायात प्रबंधक
श्री बी. भाग्यनाथ, वि.स. एवं मु.ले.अ.
श्री प्रदीप महान्ति, उप संरक्षक
डॉ. अनिल चेलानी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री वी. रवीन्द्र रेड्डी, मुख्य अभियंता
श्री ए. रामास्वामी, मुख्य प्रचालन प्रबंधक
श्री सुशीलचंद्र नाहक, उप. मुख्य यांत्रिक अभियंता

संपादक

श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ सहायक सचिव

उप-संपादक

डॉ. महेश बापट, वरि. उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री ओम प्रकाश दादलानी, जनसंपर्क अधिकारी
श्री राजेश रोत, उप सामग्री प्रबंधक

सहायक संपादक मंडल

श्री वेदरुचि आचार्य, सहायक प्रशासनिक अधिकारी
श्री राजेन्द्र पाण्डेय, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
सुश्री इशरावती यादव, हिन्दी अनुवादक

सम्पादकीय

श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ सहायक सचिव एवं
संपादक, लहरों का राजहंस

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' का बाइसवां अंक भी राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार आपके सम्मुख ई-पत्रिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसे आप दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की वेबसाइट और राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर जाकर पढ़ और डाउनलोड कर सकते हैं।

हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' के माध्यम से दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में सेवारत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की रचनात्मकता एवं उनके विचारों का प्रवाह आप सबके सामने प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पत्तन में संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उठाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

दीनदयाल पत्तन, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप प्रदर्शन कर रहा है। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के एकजुट प्रयासों से दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण राष्ट्रीय स्तर और नराकास स्तर पर पुरस्कार प्राप्त करता रहा है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं, जिनमें पर्याप्त संख्या में सहभागिता की जा रही है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पोर्ट में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में पोर्ट की संवैधानिक जिम्मेदारी के निर्वहन में पोर्ट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर मिलता रहेगा। इस पत्रिका के माध्यम से अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को साझा कर सकते हैं और एक दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं।

सरकारी/सरकार नियंत्रित कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अधिकारियों के स्तर से लेकर कर्मचारियों के स्तर तक होना अपेक्षित है। अत: सभी अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर निगरानी रखना एवं अधीनस्थ सहकर्मियों को अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करना एवं उत्तरदायी बनाना भी अत्यावश्यक है। दीनदयाल पोर्ट में कार्यरत प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी से विनम्र अनुरोध एवं आग्रह है कि अन्य क्षेत्रों की तरह ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अपना सर्वोत्तम योगदान एवं सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते रहें ताकि संगठित एवं एकजुट प्रयास से प्रबंध तंत्र की अपेक्षानुसार राजभाषा कार्यान्वयन के शीर्षस्थ बिंदु को आगे भी स्पर्श किया जा सके।

सतत सहयोग हेतु प्रबंधन के प्रति, साथ ही साथ सुविज्ञ एवं सुधी पाठकों के प्रति तथा अपनी रचनाएं देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के प्रति हृदय तल से आभार प्रकट करते हुए आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ।

अस्वीकरण : पत्रिका में लेखकों के अभिव्यक्त विचारों से पत्तन प्राधिकरण एवं संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। पत्रिका में उल्लिखित नियम आदि के मूल पाठ को ही प्राधिकृत माना जायेगा।

अनुक्रमणिका

1.	मैं और छोटू	डॉ. महेश बापट	1
2.	लोकगीत	श्रीमती रानी कुकसाल	3
3.	आसान बनाम मुश्किल	श्रीमती रानी कुकसाल	4
4.	आज़ादी	श्रीमती आरती निहलानी	4
5.	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा	सुश्री यशस्विनी यादव	5
6.	भारतीय नौवहन	श्री गोपाल शर्मा	7
7.	मानव पुस्तकालय	श्री सागर गढ़वी	7
8.	झलक	सुश्री दीक्षा राजपुरोहित	8
9.	सफर	सुश्री दीक्षा राजपुरोहित	8
10.	मलाल	श्री शुभ सक्सेना	8
11.	'बोध' एक कथा	श्री दिनेश आई. भूत	9
12.	कहानी के आगे	कु. पर्ल कैलाश उचवानी	9
13.	भगवान बनाम शैतान	श्री महेश एम. खिलवानी	10
14.	चार घोड़ों की कहानी	श्रीमती तन्वी कैलाश उचवानी	12
15.	बात बेहद खटकी	श्रीमती संगीता खिलवानी	13
16.	मैं नतमस्तक हो गया हूँ	श्री नितेश एम. सोलंकी	13
17	संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ	----------	14-17
18.	कर्म का फल	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	18
19.	सुख और दुःख	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	19
20.	पर्यावरण और खुद की रक्षा	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	19
21.	श्री हरिवंशराय बच्चन जी की कृति से संकलित	श्री हरीश एच. बचवानी	20
22.	पेड़ों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी	सुश्री गीता त्रिपाठी	20
23.	खुदा के गुलाम	कु. फातिमा बोहरा	21
24.	ऐसी ही हूँ मैं	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	21
25.	एकांत सर्जन की जरूरत	कु. हिमालय उचवानी	22
26.	कच्छ के सपूत – पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा	श्री सतीश मोता	23
27.	अंतिम ऊँचाई	कुमारी मोनिका टी. लोचानी	24
28.	पर्यावरण	कु. शिवानी रावल	25
29.	निर्भया	श्री हरीश एच. बचवानी	26
30.	ईमानदारी – एक जीवन शैली	कु. हनी खिलवानी	27
31.	सत्यनिष्ठा – एक अनमोल खज़ाना	श्री प्रतीक भावनानी	29
32.	मृत्यु शय्या पर रावण ने लक्ष्मण को दी थी ये तीन महत्वपूर्ण सीख	सुश्री गीता त्रिपाठी	30
33.	शब्द	श्रीमती अंजू आहुजा	30
34.	इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय	श्रीमती बीना खीमजी महेश्वरी	31
35.	प्रो. प्रशांत चंद्र महालानोबिस–भारतीय सांख्यिकी क्षेत्र के पिता''	श्री विजय अग्रावत	32
36.	कर्म की धरा पर चूर होते मोती	सुश्री इशरावती यादव	33
37.	राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी	----------	35

मैं और छोटू

डॉ. महेश बापट
वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी

अभी मैंने प्लास्टिक की थैली को तह करके अपने जेब में डाला ही था, कि बहुत देर से मुझे ताकता खड़ा छोटू बोल पड़ा । बाबा अभी-अभी थोड़े दिन पहले ही शायद हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि सिंगल यूज प्लास्टिक को हमें उपयोग में नहीं लाना है, और उसे उपयोग में लाने की आपकी तैयारी मुझे दिखाई पड़ रही है । मैंने स्वीकार किया कि वह सही बोल रहा था । हालांकि छोटू के सामने इस तरह की कोई भी बात अस्वीकार करना बड़ा मुश्किल होता है । क्योंकि देर सवेर ऐसे ना वैसे, प्रश्न पूछ-पूछ कर मुझे सही रास्ते पर ले ही आता है । मैंने उसे कहा हां बेटा तुम बात तो सही कह रहे हो । छोटू बोला हमारे पास बहुत सारी कपड़े की थैलियाँ है । क्यों नहीं आप उसमें से कोई ले लेते ? हां हां ठीक है कह कर मैंने एक थैली चुनकर तह करके अपनी जेब में रखी और छोटू की और देखा। छोटू अब चलने को तैयार था । छोटू के साथ कहीं भी जाने में इन सब छोटी-छोटी चीजों का बहुत ध्यान रखना पड़ता है । कुछ चीजें तो मैंने हीं सिखाई हैं, और बाकी बहुत सारी चीजें यहां वहां से देख समझकर और उस पर प्रश्न पूछ पूछ कर वह अपनी राय बनाता जाता है ।

हम बाहर निकले ही थे । सामने विनोदभाई चींटियों को शक्कर डालते हुए दिख गए । विनोद भाई को छोटू जानता है । विनोद भाई की एक पान की दुकान है और विनोद भाई हमेशा चीनी की थैली लेकर निकलते हैं, और पेड़ों के किनारे जमा हुई चींटियों को खिलाते जाते हैं । थोड़ा-थोड़ा सब जगहों पर डालकर चींटियों को शक्कर जब पूरी तरह दे चुके होते हैं, तो प्लास्टिक की थैली को फेंक देते हैं । वैसा ही उन्होंने अभी भी किया । चीनी खत्म होने के बाद उन्होंने थैली झाड़ी और नीचे पटक दी । छोटू यह सब देख रहा था । मुझे कुछ गड़बड़ी की संभावना लग रही थी । इसलिए उसे भाँपते हुए मैंनें कहा छोटू । यह विनोद भाई हैं । हां-हां मैं जानता हूँ छोटू बोला यह तो वही हैं ना जिनकी दुकान है अपने शॉपिंग सेंटर में । हाँ वही तो । कभी-कभी तुम भी चेरी खाने जाते हो । हाँ हाँ काफी दिन हो गए ।

एक बात बताइए अंकल । आपने तो बहुत सारी शक्कर एक ही दिन में इन सब चींटियों को खिला दी । चींटियों को डायाब्रिटीज तो नहीं हो जाएगा ? और आप इन्हें सारी शक्कर आज ही क्यों खिला रहे हैं ? और इनको शक्कर खिलाने से क्या होता है ? विनोद भाई सोच में पड़ गए । शायद वह अभी पहले सवाल का जवाब ढूंढ ही रहे होंगे तब तक दूसरा सवाल उपस्थित हो गया था । लेकिन क्योंकि दूसरे सवाल का जवाब वह दे सकते थे इसलिए उन्होंने दिया । उन्होंने कहा । छोटू अपने यहाँ ऐसा कहा जाता है कि ऐसे छोटे प्राणियों को कुछ खिलाने पिलाने से अपने पाप कट जाते हैं और अपना कर्ज़ा भी कम हो जाता है । छोटू के माथे पर जिज्ञासा साफ नजर आ रही थी । छोटू ने फिर से पूछा । लेकिन अंकल मैं देख रहा हूँ। आपने वह प्लास्टिक की थैली नीचे फेंक दी । चींटियां तो बहुत छोटी-छोटी हैं और उन सब चींटियों को आपने शक्कर भी खिला दी । लेकिन आपकी फेंकी हुई प्लास्टिक की थैली, जिसे खाकर गाय मर जाएगी । तो इतनी सारी चींटियों से भी बड़ी तो गाय है । तो आपने अपना पाप तो छोटी-छोटी चींटियों में काटा है लेकिन बड़ी गाय में पाप फिर से हो गया आपका और बड़ा पाप हुआ । अभी कुछ दिन पहले ही छोटू को प्लास्टिक खाने से गाय मर जाती है, इसका उसकी कक्षा में ज्ञान दिया गया था और प्लास्टिक का उपयोग कम करने के भाषण में उसने यह सुन लिया था कि हमें प्लास्टिक की पन्नियां, इस तरह की चीजें यत्र-तत्र नहीं फेंकनी चाहिए । क्योंकि इसमें अगर जूठन डाली जाए, या कोई भी खाद्य सामग्री भरकर फेंकी जाए तो इसे गाय और अन्य पशु खा लेते हैं । उसके पेट से यह निकल नहीं पाती और अंतत: उन्हें अपने प्राण गँवाने पड़ते हैं ।

विनोदभाई अभी हमारी तरफ बड़े आश्चर्य से देख ही रहे थे । लेकिन उन्हें उसी मुद्रा में सोचता छोड़कर प्लास्टिक की थैली उठाकर उनके हाथ में देते हुए मैं छोटू को लेकर आगे बढ़ा । शायद सोच रहे होंगे मां-बाप ने पता नहीं क्या-क्या पढ़ा दिया है इसे ? लेकिन अभी भी छोटू का मन शांत नहीं हुआ था । आगे जाकर छोटू ने मुझसे पूछा । बाबा यह तो वही विनोद भाई हैं ना ? जो कैंसर की पुड़िया बेचते हैं ।

अब हैरान होने की बारी मेरी थी । अरें, कैंसर की पुड़िया किसने बताया तुम्हें ? बाबा, वह बड़े दया पूर्ण नजरों से मेरी तरफ देखता हुआ बोला । हम जब उनकी दुकान पर जाते हैं । तो बहुत सारे पैकेट ऐसे लटके हुए दिखते हैं । जिसमें एक आदमी का जबड़ा बहुत बड़ा खुला हुआ होता था और जिसमें कुछ घाव हुआ दिखाया जाता है । ऐसे कई सारे पैकेट उनकी दुकान में लगे रहते हैं और थोड़ी-थोड़ी देर में, कुछ कुछ लोग आते हैं पैकेट लेकर जाते हैं जिस पर लिखा था डेंजर कैंसर । मुझे बताइए कि वह कितने लोगों को कैंसर की इलाज की पुड़िया दे चुके हैं ?

यह बच्चा तो दिनों दिन भयंकर होता जा रहा था । अब इसे कैसे समाझाऊं कि वह कैंसर की पुड़िया नहीं थी । वह तो कैंसर होने के लिए बेची जाने वाली तंबाकू की पुड़िया थी ।

छोटे बच्चे विश्वास भी बहुत जल्दी कर लेते हैं इसीलिए उन्हें हमेशा सत्य ही बताना चाहिए । नहीं तो जब उन्हें इस बात का पता पड़ता है तो उन्हें बड़ी ठेस लगती है । छोटू को मैंने धीमे-धीमे और उसे समझ में आए इस तरीके से तंबाकू के बारे में बताया । उसके चेहरे पर कुछ समझ में आने जैसे भाव थे । बात आई गई हो गई ।

कुछ दिन बाद की बात है । अभी छोटू स्कूल से लौटा ही था, और हम लोग भोजन की फ़िराक में थे । विचार पूर्ण चेहरा कर छोटू किसी उधेड़बुन में लगा दिख रहा था । हमेशा की तरह वह भोजन की जल्दी में नहीं था । अपना बस्ता एक ओर फेंक कर उसने अपनी माँ की ओर रुख किया और कहने लगा कि तुम्हें आज ही नाना जी को फोन लगा देना चाहिए नहीं तो बहुत देर हो जाएगी । हम लोग असमंजस में उसकी ओर देखते रह गए । उसने अपनी बात को स्पष्ट किया और कहा मां नाना जी को वह तंबाकू की पुड़िया खाते हुए मैंने देखा है । उन्हें जल्द से जल्द तंबाकू छोड़ देनी चाहिए नहीं तो कैंसर शुरु हो जाएगा । नाना जी से माँ की बात करवा कर ही वह माना । अच्छा यह रहा कि नाना जी भी इस बात को मान गए और तभी से उन्होंने तंबाकू खाना छोड़ दिया ।

मेरे मौसा जी को सिगरेट पीने की आदत थी । मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है यह उन्हें पता था । इसलिए जब भी मौसी-मौसा जी यहाँ पर आते तो बीच-बीच में मौसा जी घर से बाहर निकल कर दूर कहीं सिगरेट पी आते थे । उनके दुर्भाग्य से छोटू की नजर उनके पैकेट पर पड़ गई । उसने वह पैकेट छुपा दिया । दूसरे दिन वे बेचारे अपना सिगरेट का पैकेट ढूंढ रहे थे और मुझे कोसते जा रहे थे । उन्हें पक्का विश्वास था कि मैंने ही उसे छुपा दिया है । समझाने के बावजूद भी वह नहीं माने । बहुत ढूंढने पर भी मैं वह पैकेट नहीं ढूंढ सका । अब मैं तुम्हारे यहां नहीं आऊंगा कहकर जाते समय वह अपना गुस्सा दिखा गए । छोटू स्कूल गया हुआ था इसलिए उससे तफ्तीश नहीं की जा सकी । हम लोग भी इस बात को भूल गए 11 साल बाद घर की साफ सफाई करते हुए वह पैकेट बरामद हुआ तब यह घटना याद आई ।

बच्चों की हमारे व्यवहार पर कितनी पैनी नजर होती है हम उन पर कितने अच्छे संस्कार अपने व्यवहार द्वारा डाल सकते हैं यह बिल्कुल स्पष्ट है । कथनी और करनी में होने वाला यह अंतर बच्चों के विश्वास को तोड़ सकता है । उनकी श्रद्धा को डिगा सकता है । इसलिए हमें कितना भी अव्यवहारिक प्रतीत क्यों न हो हमें, हमारे व्यवहार को सच्ची नीति और अच्छी रीति से करना चाहिए ।

लोकगीत

श्रीमती रानी कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक
विद्युत अनुभाग

लोकगीत है क्या – मानव की प्रसन्नता के भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम लोकगीत है।

लोकगीत की भाषा कैसी होती है – लोकगीत की भाषा सरल होती है सभी आसानी से अपनी परंपराओं से जुड़ सकें ग्रामीण और अशिक्षित भी आसानी से समझ पाएँ ऐसी सरल भाषा होती है विशेषत: यह आम जन द्वारा रचित रचना होती है अत: इसमें देशज शब्दों का प्रयोग अधिक होता है और क्लिष्ट शब्द कम प्रयोग में लाए जाते हैं। अश्लील शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। भाषा स्थान के अनुरूप होनी चाहिए।

चित्र और बिंब प्रयोग : यदि उत्तर या मध्य प्रदेश के लोकगीत की बात हो रही है तो उसमें बर्फ और समुद्र के दृश्य प्रसंगानुकूल ही आने चाहिए यथा ''पिया ले चलो सागर के तीर हो'' स्थान के अनुरूप और रिवाज के अनुरूप ही श्रृंगार का वर्णन होना चाहिये अर्थात् देहात और नगर की नायिका का सौंदर्य उसी देश के अनुरूप होना चाहिये हाँ प्रसंगानुरूप वर्णन स्वाभाविक है।

लोकगीत के विषय क्या होते हैं : विवाह, भक्ति, प्रेम–विरह, मनुहार, मल्हार विविध रस से विविध संस्कार प्रकृति आदि सभी का समावेश लोकगीतों में हो सकता है। यथा – गर्भधारण, आशिष गीत, गर्भधारण के बाद गोदभराई गीत, संतान जन्म के बाद सोहर गीत, छट्ठी के गीत, अन्नप्रासन के गीत, मुंडन के गीत, यज्ञोपवीत के गीत, विवाह के गीत – प्रकृति के साथ जोड़ते हुए लोकगीतों को विरह गीतों में ढाला जाता है तब उसका सौंदर्य और भी बढ़ जाता है। यथा –

''हे गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबै, सैंया से करि दे मिलनवा हाय राम''

लोकगीत सामूहिक गायन की विधा है जो बरबस थिरकने को विवश कर देती है। आमतौर पर इसकी मिठास हारमोनियम और ढोल से ही बढ़ जाया करती है तथापि बड़े मंचो पर आकर इसे विविध वाद्यों से सजा दिया जाता है। राजस्थान में कजलिया और असल में कजरी माँ विंध्यवासिनी के शक्तिपीठ के रूप में आस्था का केन्द्र बिंदु रहा है। अधिसंख्य कजरियों में शक्तिरूपा देवी का ही गुणगान मिलता है। आज कजरी के वर्णन विषय काफी विस्तृत हैं परंतु कजरी गायन का प्रारंभ देवी गीत से माना जाता है। भारत में हर एक प्रांत के लोकगीतों में ब्रज का मलार पटका अवध की सावनी, बुन्देलखण्ड का राछरा और मिर्जापुर और वाराणसी की कजरी प्रसिद्ध हैं। लोक संगीत के इन सब प्रकारों में वर्षा ऋतु का मोहक चित्रण मिलता है न कि पूरी प्रकृति का। इन सब लोक शैलियों में कजरी ने देश के व्यापक क्षेत्र को प्रभावित किया है। कजरी लेखन में हरे रामा, रे हरी और न आदि का टेक लिया जाता है। अगर ये टेक नहीं लिया जाता तो भी कजरी का अपना अलग राग है जो सबको थिरकने और गुनगुनाने पर मजबूर कर देता है। यह अर्धशासकीय गायन विधा के रूप में भी विकसित हुई है और इसके गायन में बनारस घराने की खास दखल है। कजरी लोकगीतों की रानी है। सिर्फ गाने भर ही नहीं बल्कि सावन की सुंदरता और उल्लास को दिखाने का हुनर भी रखती है। चरक संहिता में तो यौवन की संरक्षा और सुरक्षा हेतु बसंत के बाद सावन महीने को ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। सावन में नई ब्याही बेटियाँ अपने पीहर वापस आती हैं और बगीचों में भाभी और बचपन की सहेलियों के संग झूला झूलती हैं तो कजरी में भाभी ननद की बातें, पति–पत्नि की यादें, तकरार, और मनुहार आदि को कजरी लोकगीतों में गाया जाता है।

कजरी का विषय श्रृंगार का संयोग और वियोग माना जाता है। यह विशेषत: बनारस घराने की मानी जाती है। ''नहिं आए घनश्याम घेरि आई बदरी, बैठी तीरे बृज बाम तू न मेरो लाज धाम, आई सावन की बहार मुझे मोरवा पुकार, पड़े बुंदन फुहार घेरि आई बदरी, कान्हा हमें बिसराय रहे सौतन लगाय, करी कौन उपाय घेर आई बदरी''

''भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।'' –अमित शाह (गृह मंत्री)

लोकगीत मौखिक रूप में जीवित हैं । इसका कोई विशेष कवि समुदाय नहीं होता । आम जनता ही इसकी जनक हुआ करती है । इस विधा को लिपिबद्ध नहीं किया जा सका है । इसके कई प्रकार हैं यथा – प्रकृति संबंधी – पारिवारिक लोकगीत – धार्मिक लोकगीत – इसकी अनेक विशेषताएं हैं – साधारण लोकगीत चार पाँच स्वरों में ही मिलते हैं जिससे वे अच्छी तरह से आसानी से समूह में गाइ जा सकते हैं । लोकगीत लयबद्ध होता है अत: आसानी से गाए जा सकते हैं । अनेक लोकगीत एक ही तर्ज और धुन में गाए जाते हैं । लोकगीत सरल अर्थयुक्त होते हैं । लोकगीत की भाषा अत्यंत सरल होती हैं । लोकभाषा इसके केन्द्र में होती है । अति विलम्बित लय नहीं होते इनमें अन्यथा इनका आनंद कम हो जाता है । लोकगीत एकल में इतने सुंदर नही लगते जितने रसयुक्त वे सामूहिक में लगते हैं । स्वर की अपेक्षा ये लयप्रधान होते हैं । ध्येय मनोरंजन होता है । अपने धर्म संस्कृति और रिवाजों से बाँधते हैं । वर्तमान में भी भूतकालीन सभ्यताओं को परोसते और संजोते हैं । प्राचीन को नवीन से जोड़ती हैं यथा बन्ना–बन्नी को बुला लो टेलीफोन करके क्रमवार इतिहास के पन्ने पलटती है । भाई–बहन के स्नेह माता–पिता के लाड में पली लडकी की विदाई हर एक को लोकगीत के माध्यम से अधिक करूण लगती है ।

आसान बनाम मुश्किल

श्रीमती रानी कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक, विद्युत अनुभाग

शिक्षा पाना है आसान, मुफ्त में वितरण है मुश्किल
लक्ष्मी पाना है आसान, सरस्वती लाना है मुश्किल

निंदा करना है आसान, प्रशंसा कर पाना है मुश्किल
अन्याय दबाना है आसान, उजागर करना है मुश्किल

नियम लागू करना आसान, अमल में लाना है मुश्किल
सजा दिलवाना है आसान, क्षमा कर पाना है मुश्किल

धन पर इतराना आसान, दीन पर न्यौछावर मुश्किल
सुदिन में रमना है आसान, विपत्ति में मुस्काना मुश्किल

गैर की अवनति है सुखकर, उन्नति पर हर्षाना मुश्किल
धर्म को अपनाना आसान, धर्म का पालन है मुश्किल

भाषण देना है आसान, देश पर मर जाना मुश्किल
माँ का तिरस्कार आसान, विमुख हो जी पाना मुश्किल

आज़ादी

श्रीमती आरती निहलानी
कनिष्ठ अभियंता (सिविल)

ना राजा ना रानी,
गण से चले तंत्र, वही है गणतंत्र की कहानी ।
आजादी इंसान का हक है मानी,
पर क्या यही है आजादी की कहानी ।
पहले थे कैद, अब हैं आजाद ।
क्या यही है आजादी ।
विचारों की आजादी,
संस्कारों की आजादी,
फिर भी दुष्कर्म रुकते नहीं ।
क्या यही है आजादी ।
पढ़ने की आजादी,
लिखने की आजादी,
फिर भी पढ़ लिख के देश के लिए गद्दारी,
क्या यही है आजादी ।।
कमाने की आजादी,
मानने की आजादी,
फिर भ्रष्टाचार करना देश को लूटना ।
क्या यही है आजादी ।।
भगतसिंह का बलिदान
और वीर सुभाष का अभिमान ।
फिर भी इंसान बेईमान
क्या यही है आजादी ।
शास्त्री की खुद्दारी,
और कलम की ईमानदारी
फिर भी गरीबी और बेरोजगारी
क्या यही है आजादी ।
नारी की सिसकारी
गरीबों की लाचारी
तुष्टि करण की नीति,
एक जाति से प्रीति
क्या यही है आजादी ।
आओ इस आजादी के अमृत महोत्सव
में एक अजूबा सा प्रण करें,
गणतंत्र की परिभाषा को सही मायने
में साकार करें ।

नासमझी जो आजादी की है
आज उसका प्रतिकार करें
हौंसले बुलंद हैं तो,
जंग कोई भी जीत जाएंगे ।
लेकिन अपनी आज़ादी को
यूँ हीं नही गँवाएंगें ।

जय हिंद ।

चीर के ज़मीन को, मैं प्रदूषण बोता हूँ, मैं प्लास्टिक हूं, जीवन छीन लेता हूँ ।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं श्यामजी कृष्ण वर्मा

सुश्री यशस्विनी यादव
पुस्तकालयाध्यक्ष

जन्म : 04 अक्टूबर 1857 जन्म भूमि : मांडवी, गुजरात

माता–पिता : करशन भानुशाली, गोमतीबाई पत्नी : भानुमति कृष्ण वर्मा

प्रसिद्धि : स्वतंत्रता सेनानी, लेखक, वकील, पत्रकार

शिक्षा : बी.ए. एम ए. बार एट लॉ

मृत्यु : 31 मार्च 1930 मृत्यु स्थान : जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड

भारतीय स्वतंत्रता का संग्राम यद्यपि 1757 ईस्वी में प्लासी युद्धकाल से आरम्भ हो गया था । अंग्रेजों की व्यापारिक कंपनी और उसके शासन के बोझ तले दबे किसानों व वनवासियों के संघर्षों से भरी गाथा 90 वर्षों तक चलती रहीं । यह भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की भूमिका थी । स्वतंत्रता का विजयनाद एक दिन में नहीं मिलता, वर्षों लग जाते हैं।

1947 में मिली भारतीय स्वतंत्रता के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी थे, तो इतिहास का तथ्य यह पुष्ट करता है की इस अनवरत 1905 से चलाये गए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पितामह पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा थे, जिन्होंने अंग्रेजी शासन में अंग्रेजों की धरती लंदन में भारत भवन की स्थापना कर भारतीयों के लिए भारत में भारत सरकार की स्थापना का शंखनाद किया था ।

जीवन परिचय

महान क्रान्तिकारी राष्ट्र रत्न और गुजरात के गौरव पुत्र पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा की जीवन यात्रा दिनांक 04 अक्टूबर 1867 को मांडवी, कच्छ, गुजरात से आरम्भ हुई ।

श्याम जी कृष्ण वर्मा क्रांतिकारी गतिविधियों के माध्यम से भारत की आज़ादी के संकल्प को गतिशील करने वाले अध्यवसायी एवं कई क्रांतिकारियों के प्रेरणास्त्रोत थे । वे पहले भारतीय थे, जिन्हें ऑक्सफ़ोर्ड से एम. ए. और बार–एट–लॉ की उपाधियाँ मिली थी ।

उन्होंनें सन् 1888 में अजमेर में वकालत के दौरान स्वराज के लिए काम करना शुरू कर दिया था । मध्यप्रदेश के रतलाम और गुजरात के जूनागढ़ में दीवान रहकर जनहित के काम किए । मात्र 20 वर्ष की आयु से ही वे क्रान्तिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे थे ।

अंग्रेजी राज को हटाने के लिए विदेशों में भारतीय नवयुवकों को प्रेरणा देने वाले, क्रांतिकारियों का संगठन करने वाले पहले हिंदुस्तानी थे ।

श्यामजी कृष्ण वर्मा भी अन्य सभी क्रांतिकारियों की तरह आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज से अत्यधिक प्रभावित थे । काले पानी की सजा पाने वाले क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर भी वर्मा जी से प्रेरित होकर क्रांतिकारी कार्यों में सम्मलित हुए ।

इंडिया हाउस की अनुकृति

इंग्लैंड में स्वाधीनता आंदोलन के प्रयासों को सफल बनाने की दृष्टि से श्याम जी कृष्ण वर्मा जी ने अंग्रेजी में, जनवरी 1905 ईस्वी से 'इंडियन सोशियोलॉजिस्ट' नामक मासिक पत्र निकाला । फरवरी 1905 ईस्वी को उन्होंनें इंग्लैंड में ही 'इंडियन होमरूल सोसायटी' की स्थापना की । उस समय ये संस्था क्रांन्तिकारी छात्रों के जमावड़े के लिए

प्रेरणास्त्रोत सिद्ध हुई और घोषणा की कि हमारा उद्देश्य ''भारतीयों के द्वारा भारतीयों के लिए भारतीयों की सरकार स्थापित करना है'' । घोषणा को क्रियात्मक रूप देने के लिए लंदन में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की, जो कि इंग्लैंड में भारतीय राजनीतिक गतिविधियों तथा कार्यक्लापों का सबसे बड़ा केंद्र रहा । 1918 के बर्लिन व इंग्लैंड में हुए विद्या सम्मेलनों में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया था ।

इन्होंनें अपनी मासिक पत्रिका इंडिया सोशियोलॉजिस्ट के प्रथम अंक में ही लिखा था कि अत्याचारी शासक का प्रतिरोध करना न केवल न्यायोचित है अपितु आवश्यक भी है और अंत में इस बात पर भी बल दिया कि अत्याचारी, दमनकारी शासन का तख्ता पलटने के लिए पराधीन जाति को सशस्त्र संघर्ष का मार्ग अपनाना चाहिए ।

क्रांतिकारी शहीद मदनलाल ढींगरा उनके शिष्यों में से थे । वीर सावरकर ने उनके मार्गदर्शन में लेखन कार्य किया था ।

अंतिम इच्छा

सात समंदर पार से अंग्रेजों की धरती से ही भारत मुक्ति की बात करना सामान्य नहीं था, उनकी देश भक्ति की तीव्रता, स्वतंत्रता के प्रति आस्था इतनी दृढ थी । पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी मृत्यु से पहले ही यह इच्छा व्यक्त की थी कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी अस्थियाँ स्वतंत्र भारत की धरती पर लाई जाए ।

अस्थियों का भारत में संरक्षण

भारतीय स्वतंत्रता के 17 वर्ष पहले दिनांक 31 मार्च 1930 को उनकी मृत्यु जिनेवा में हुई, उनका शव अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के कारण भारत नहीं लाया जा सका और वहीं उनकी अंत्येष्टि कर दी गई । उनकी मृत्यु के 73 वर्ष बाद, 2003 में भारत माता के सपूत श्यामजी और उनकी पत्नी की अस्थियों को जिनेवा के सेंट जॉर्ज सेमेट्री से भारत के गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंन्द्र मोदी जी की पहल पर देश की धरती पर लाने में सफलता मिली ।

फिर अस्थियों को उनके जन्म स्थान मांडवी ले जाया गया । उनके सम्मान में 2010 में मांडवी के पास ''क्रांति तीर्थ'' नामक स्मारक बनाया गया, उस परिसर में स्थित ''श्यामजी कृष्ण वर्मा स्मृति कक्ष'' में उनकी व उनकी पत्नी की अस्थियों को संरक्षण प्रदान किया गया । भारतीय डाक विभाग ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया था और कच्छ विश्वविद्यालय का नाम उनके नाम पर रख दिया गया । दीनदयाल पोर्ट स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स का नाम भी पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा जी के नाम पर है ।

आज जिस राष्ट्रवादी दर्शन की बात होती है, श्याम जी कृष्ण वर्मा जी ने इस दर्शन को कभी उस प्रेरणा के तौर पर आगे बढ़ाया था, जिस में न देश के भीतर बल्कि दुनियाँ में कहीं भी रहने वाले भारतीय, अपने देश और संस्कृति को लेकर गर्व (फख्र) महसूस करेंगे ।

है नमन, उनको जो इस देह को अमृत्व देकर,
इस जगत में, शौर्य की जीवित कहानी हो गए हैं ।।
है नमन, उनको जिनके सामने बौना हिमालय,
जो धरा पर गिर पड़े, पर आसमानी हो गए हैं ।।

''भारतीय नौवहन''

श्री गोपाल शर्मा
लेखा अधिकारी

भारतीय नौवहन का इतिहास सिन्धु घाटी की सभ्यता जितना पुराना है। विश्व का सबसे पहला ज्वारीय डॉक हड्डपा सभ्यता के दौरान गुजरात के लोथल में बनाया गया था। अंग्रेजी का शब्द नेविगेशन जिसका प्रचलित अर्थ नौचालन है, संस्कृत शब्द नवगत से लिया गया है।

दक्षिण भारत के कुछ साम्राज्यों जिनमें से चोल एवं सातवाहन प्रमुख हैं, में नौवहन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहरों का संदर्भ मिलता है। चोल साम्राज्य का भारत के पश्चिमी और पूर्वी दोनो तटों के हिस्सों पर कब्ज़ा था, एवं समुद्री व्यापारिक गतिविधियों में अग्रणी था। आधुनिक भारत के नौवहन के इतिहास में लवजी नसरवनजी वाडिया का नाम बहुत महत्वपूर्ण है, उन्हें आधुनिक भारत में नौवहन उद्योग का जनक माना जाता है। उन्होंनें अपना वाडिया पोत निर्माण साम्राज्य 1736 में प्रारंभ किया। सूरत, भारत के पश्चिमी तट पर एक बहुत महत्पूर्ण समुद्रपत्तन था, जहाँ सबसे पहले ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई थी।

भारतीय नौवहन के इतिहास में एक और स्वर्णिम नाम है सेठ बालचंद हीराचंद। बालचंद का विश्वास था, कि देश में एक शिपयार्ड की आवश्यकता है और उन्होंने 1940 में इस परियोजना पर विशाखापत्तनम में काम करना प्रारंभ किया। इस शिपयार्ड का नाम था ''हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड'' एवं इसका सबसे पहला उत्पाद जहाज ''जलुशा'' स्वतंत्रता के शीघ्र बाद 1948 में पानी में उतारा गया था। 1961 में इस शिपयार्ड का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

मानव पुस्तकालय

श्री सागर गढ़वी
यातायात बाह्य लिपिक
यातायात विभाग

द ह्यूमन लाइब्रेरी एक ऐसा अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जिसकी नींव पहली बार सन 2000 में डेनमार्क के कोपेनहेगन में रखी गई। यह नवीनतम योजना 84 देशो में सेवारत है, इसका उद्देश्य लोगों के नकारात्मक पूर्वाग्रहों को दूर करने में उनकी मदद करना है।

इस प्रकार की लाइब्रेरी अर्थात् पुस्तकालय में ऐसे लोगों का समूह, जिन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं, समस्याओं और पूर्वाग्रहों का गहन अध्ययन कर वैचारिक रूप से स्वयं को इतना परिपक्व बना लिया होता है कि वे स्वयं पुस्तक का कार्य करते हैं। इस पुस्तकालय में लोग अपने समस्याजनक पूर्वाग्रहों से सम्बंधित विशेषज्ञों को 30 मिनिट के लिए इश्यु कराते हैं, लोग उनसे अपने वैचारिक स्तर पर बात करते हैं और विशेषज्ञ उनसे बात कर अपने अनुभव एवं अध्ययन के आधार पर उनके नकारात्मक पूर्वाग्रहों को दूर करने में उनकी मदद करते हैं।

आज के समय में अधिकतर लोगों की चर्चा का विषय सकारात्मक विचारों से हट कर नकारात्मक विषय ज्यादा हैं। कई सारे लोग आज मानसिक बीमारी से पीड़ित हैं, ऐसे में इन लोगों को सुनने के बाद लोगों को अपने नकारात्मक पूर्वाग्रहों को दूर करने में काफी मदद मिलती है, लोगों की मानसिक बीमारी को ठीक करने में भी इन विशेषज्ञों का अच्छा योगदान है।

अंतत: कह सकते है कि इस प्रकार की मानव पुस्तकालय का विकास और भी देशो में होना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके।

झलक

सुश्री दीक्षा राजपुरोहित
सहायक यातायात प्रबंधक

मैं तुमसे, तुम्हारे मुझसे मिलने से पहले ही मिल चुका था

तुम उस दिन सिमटी हुई सी कुर्सी पर बैठी हुई थी,
हाथ में कलम और कुछ दस्तावेजों को गोद में रखे हुई थी,
तुम ख्यालों में ना जाने कहीं दूर खोई हुई थी,
तुमने सफेद कुर्ती और सलवार पहनी हुई थी,
तुम अपने आत्मविश्वास को अपने सफेद दुपट्टे में लपेटे हुई थी,
तुम सादगी और सहजता को एक साथ खुद में पिरोए हुई थी,
तुम अपनी चिंताओं को अपनी मुस्कुराहटों के घूंघट से ढंके हुई थी,
कोई तुम्हारी आंखों से असहजता को न पढ़ सके,
शायद... इसीलिए आखिर तक नजरें तुम्हारी झुकी हुई थी,

तुम्हें तो पता ही नही की मैं कब तुमसे मिलकर निकल गया,
शायद...मैं उसी एक झलक के इंतजार में एक अरसे से थमा हुआ था।
आख़िर मेरे इंतजार के सफर को उस दिन
उसका मुकद्दर मिल गया था,
मेरे यहाँ होने की वजह से, मैं अक्सर उलझा रहता था।
शायद... वो एक झलक ही मेरी हजारों उलझनों का हल थी।

सफर

करछी कड़ाही के साथ जिसकी सुबह शाम होती थी,
वो कलम किताब से अपनी कहानी लिखेगी।
घर की चार दीवारी ही जिसकी दुनिया थी,
अब वो दुनिया का एक नया चेहरा देखेगी।
जो दफ्तर कुछ सालों से पराई सी हो गई थी,
अब वो फिर से अपनी सी लगने लगेगी।
जिस कुर्सी पे अक्सर पापा बैठा करते थे,
अब वहां माँ बैठी मिलेगी।
हमने तो सिर्फ राह दिखाई थी,
सफर तो आपने अकेले ही तय किया है।
कई संघर्षों और कई चुनौतियों से लड़कर,
आज आपने ये मुकाम हासिल किया है।

जो भुलाया न जाएगा कभी भी,
आज आपने वो इतिहास लिखा है।
लोग देंगे आपका उदाहरण सभी को,
आज आपने ऐसा काम किया है।
अब आप बनोगे प्रेरणास्त्रोत दुनिया के लिएं,
आज आपने कईयों के सपनों को रास्ता दिया है।
हम ठान लें तो जीवन में कुछ भी नामुमक़िन नहीं,
आज आपने इस बात को साबित कर दिया है।
हमारे इस सपने को पूरा करके,
माँ आज आपने हमें सब कुछ दे दिया है।
ये तो शुरुआत है आपकी बुलंदियों की,
आज एक सफर खत्म हुआ और दूसरा शुरू हो गया है।

मलाल

श्री शुभ सक्सेना
सांख्यिकीय प्रशिक्षु,
यातायात विभाग

मुझे मलाल है ख़ुद से,
कि किसी से खुल के मलाल भी ना कर सका,
उलझा रहा खुद के सवालों में,
के जब बात औरों की आई तो खुल के सवाल भी ना कर सका।
मुझे मलाल है ख़ुद से,
ये कि मैंने अपनी आधी ज़िन्दगी अपने मस्तिष्क में ही बिता दी,
मैं तो खुल कर घृणा भी ना कर सका,
औरो से द्वेष हुआ, मन में रखा, आगे बढ़ा और क्षमा करता रहा,
यहां खुद में ही खुद से लड़ता रहा,

और बात जब अपनी आई रो खुद में ही क्रोध जमा करता रहा।
मुझे मलाल है खुद से, हर कदम फूंक फूंक के ही रख सका,
के हमेशा पिछले प्रेम का अवशेष ले कर आगे बढ़ा,
ये कि मैं खुल के प्रेम भी ना कर सका, किसी से प्रेम किया भी तो बहुत अधूरा,
बहुत सादा, और अब दिल टूटने के क्षण पर आया,
तो टूटा भी बस आधा, रहा तो बस मलाल,
मुझे मलाल है खुद से, ये कि मैं खुद से ही मलाल करता रहा।

''बोध'' एक कथा

श्री दिनेश आई भूत
सहायक
समुद्री विभाग

शाम को जब मैं ऑफिस से घर आया तो थकान महसूस हो रही थी । फ्रेश हो कर, पहले थोड़ा आराम किया, फिर चाय – नाश्ता किया । बीवी ने पूछा की क्या हुआ ? कोई तकलीफ है ? मैंने कहा, कुछ नहीं, बस यू ही थोड़ी सी थकान लग रही थी । अब मै नॉर्मल हूँ ।

अगली सुबह चाय–नास्ता करते समय बीवी ने फिर पूछा कल क्या हुआ था ? हैल्थ में कुछ गड़बड़ी थी क्या ? मैंने कहा, कुछ नहीं था, सिर्फ थकान महसूस हो रही थी । फिर मै तैयार हो कर ऑफिस पहुँच गया । मुझे थोड़ा टेंशन यह था कि मेरा मेडिकल रिपोर्ट नॉर्मल नहीं था । रिपोर्ट में, मेरे लिवर में थोड़ी सी सूजन बताई गई थी । मुझे जिसका डर था वही हुआ । मेरे पीने की आदत की वजह से कुछ दिनों से मेरे पेट में दर्द हो रहा था । पहले तो मैने इसे गंभीरता से नही लिया, पर जब दर्द बार–बार होने लगा तो...फिर मेडिकल रिपोर्ट करवा ही ली ।

ईमानदारी से कहूँ तो, मैंने मेडिकल रिपोर्ट की बात घर में बताई नहीं थी । डॉ. मैं कभी–कभी ड्रिंक करता हूँ, ये बात मेरी वाइफ को मालूम थी, कभी–कभी हमारी आर्गुमेंट्स भी होती थी, पर मुझे मालूम था कि दोष तो मेरा ही है । अब मुझे महसूस होने लगा कि, कभी–कभी पीने से, उसकी आदत हो जाती है, जो आगे चलकर मुश्किले पैदा कर सकती है । मैंने अपने भविष्य के बारे मे सोचा, अगर अभी ये हालात है, तो आगे जाके क्या हो सकता है ।

आज मैंने ठान ली कि, मेरी जो ड्रिंक करने की आदत है, उसे मैं खत्म करके ही रहूँगा । मेरी फेमिली को पूरा न्याय दूंगा एवं बच्चो के भविष्य को उज्जवल बनाऊँगा । मैंने यह भी मान लिया कि मैं ऐसा कर सकता हूँ और करूंगा भी ।

शाम को जब मैं ऑफिस से घर आया तो फ्रेश हो चुका था, पहले चाय–नास्ता किया फिर बीवी बच्चों के साथ समय बिताया । बीवी मनोमन समझ गई, आज मैं नॉर्मल हूँ । डिनर के बाद थोड़ी देर टीवी देखा और फिर...गुड नाईट बोल के, रात को गहरी नींद में समा गया ।

कहानी के आगे...

कु. पर्ल कैलाश उचवानी
सुपुत्र - श्री कैलाश उचवानी
सांख्यिकीय सहायक-यातायात विभाग

एक बार एक घने जंगल में मेंढको का समूह घूम रहा था । सहसा दो मेंढक गहरे गड्ढे में गिर गए दोना ऊपर आने की कोशिश कर रहे थे परंतु कूदकर बाहर आना मुश्किल था । दूसरे मेंढक दोस्त उन्हें बता रहे थे, तुम नहीं आ पाओंगे ।

अचानक एक मेंढक ने ऐसी छलांग लगाई कि वो ऊपर पहुंच गया । मेंढक का झुंड अचंभे में आ गया, सभी मेंढक उसे बारी–बारी शुभकामनाऐं देनें लगे तब उस झुंड को समझ आया कि मेंढक बेहरा है । वह उत्तेजित होकर मंजिल हासिल कर पाया है । ऐसे ही हमें दुनिया की नकारात्मक बातों को बहरे कानो से सुनना चाहिए ।

यह कहानी माँ अपनी बेटी को सुनाती है तब का वार्तालाप :

बेटी : माँ, यह सिर्फ कहानी है, कहानी में मेंढक को सिर्फ एक बार ही बताया गया है जब वास्तविक ज़िंदगी के सफर में, यदि नज़र अंदाज की कला में, कोई व्यक्तित्व निखर भी जाता है तो यह समाज उसे अशिस्त, अहंकारी व्यक्तित्व का नाम देते हुए घृणा की नजर से देखता है ।

माँ : बेटी, मेरी प्यारी बेटी, कहानी का बोध है कि यदि हमें अपना लक्ष्य प्राप्त करना है तो लोगो की बातो को अनसुना कर अपने पथ पर अग्रसर होना चाहिए ।

भगवान बनाम शैतान

श्री महेश एम. खिलवानी
सहायक, नगर विकास स्कंध

नेपथ्य से

मैं इस पूरी सृष्टि का रचयिता ब्रह्मा हूँ। मैंने ही तुम्हारा सृजन किया है। वानर से लेकर मनुष्य होने तक विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए और अनगिनत बदलाव के साथ तुम्हें तैयार किया मैंने। हे मानव, मैंने तुम्हें अपना ही प्रतिरूप बनाया है। तुम्हें हर प्रकार से शक्ति-संपन्न किया है, लेकिन ये क्या हो रहा है इस दुनिया में.... ? हलवाई सिंथेटिक दूध और नकली मावा बना रहा है। व्यापारी टायरों की प्लास्टिक को पीसकर उससे धूप-बाती बनवा रहा है। एक तस्कर नकली नोटों को बाजार में खपा रहा है। एक नेता दारू के ठेके चला रहा है और मंदिरों में सोना चढ़ाकर अपने पाप धोने की कोशिश कर रहा है। कुछ ढोंगी बाबा सबको मोहमाया से दूर होने के लिए कहते हैं लेकिन वे खुद संसार के मोहमाया से निकलने में असमर्थ है। लोगों के अंधविश्वास का फायदा उठाकर वे अपनी दुकान धड़ल्ले से चला रहे हैं। लोग अपने स्वार्थ के लिए एक दूसरे का रक्त बहा रहे हैं। एक आतंकवादी...चरमपंथी मानव-बम बनाने के तरीके और धर्म के महत्व को समझ रहा है। जिसने तुम्हें बनाया तुम उसे ही बनाने लगे। तुम लोग शैतान के वशीभूत हो गए हो...जिधर नजर दौड़ाता हूं वहीं धोखा, व्यभिचार, लूट-खसोट, भ्रष्टाचार...ये देखो तुम्हारे चरित्र का कुछ नमूना...

जमीनदार - (तीन लठैतों के साथ) क्या हुआ रे, हमारा हिस्सा अभी तक नहीं पहुँचाया। इसलिए हमको तेरे दरवाजे पर आना पड़ा।

किसान - हमारे पास आपको देने के लिए कुछ है ही नहीं मालिक।

जमींदार - (जोर से हंसता है तभी किसान की बेटी का प्रवेश। जमींदार उसे घूरकर देखता है) क्या बात है...घर में जवान बेटी को बिठा रखा है और बोलता है कि देने के लिए कुछ भी नहीं है। हम इसको ले जा रहे हैं। इसके बदले तुझे जो भी चाहिए हमारी हवेली में आकर ले जाना। तेरा सारा पुराना हिसाब-किताब चुकता हुआ (किसान जमींदार के पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाता है जमींदार पैर छुड़ाने की कोशिश करता है और तीनों लठैत डंडों से प्रहार कर उसे अधमरा कर देते हैं और लड़की को उठाकर ले जाते हैं)

(दूसरे दृश्य में)

(लड़की एक बाबा के पास आती हैं, बाबा आंखें बंद किए हुए ध्यान लगाए बैठे हैं)

लड़की - महाराज, मैं बड़ी उम्मीद लेकर आपके पास आई हूं। मेरी शादी को तीन साल हो गए मगर आज तक मैं संतान का सुख नहीं देख पाई हूं। इस वजह से मेरे सास-ससुर, मेरे पति मुझे बहुत ताने सुनाते हैं बाबा। समाज वाले पता नहीं कैसे-कैसे शब्दों से बुलाते हैं। आपका नाम सुना, तो बड़ी उम्मीद लेकर आई हूं बाबा।

बाबा - चिंता मत करो बच्ची, बहुत सी औरतों को हमने उम्मीद से परिपूर्ण किया है।

लड़की - जी मैं समझी नहीं

बाबा - समझ जाओगी बच्ची। हम समझा देंगे तुम्हें।

लड़की - बाबा...कृपा करें, मुझे भी संतान प्राप्ति का सुख दें महाराज...कृपा करें (चरणों में गिर जाती है)

बाबा - बस बालिके...बस (उसे पकड़कर उठाते हैं) अब तुम्हें कुछ नहीं करना है, अब तुम मेरे पास आ गई हो, जो करना है हम करेंगे। हम अंतरयामी हैं...हम सब कुछ जानते हैं। हमने आज से पहले कईयों की सूनी गोद भरी है। तो समझ लो कि तुम्हारी इच्छा पूर्ण हुई।

लड़की - बाबा, संतान प्राप्ति के लिए आप जो कहेंगे मैं करूंगी बाबा।

बाबा - मैंने कहा ना अब जब तुम मेरी शरण में आ गई तो तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, जो कुछ करना होगा अब

बाबा करेंगे...जाओ उधर हमारी चमत्कारी गुफा है उनमें तनिक विश्राम लो...बाबा अभी वहां पधारेंगे – (लड़की गुफा में चली जाती है और बाबा अट्टहास करते हैं) बाबा तेरी इच्छा अवश्य पूर्ण करेंगे सुंदरी...

(तीसरे दृश्य में)

(कुछ लड़के मोबाइल पर और कुछ लैपटॉप पर चैटिंग कर रहे हैं)

लड़का – १ – क्या बात है क्यों अंदर ही अंदर मुस्कुरा रहे हो भाई...

लड़का – २ – हर बात तुझे बताने की नहीं होती है...सीक्रेट है

लड़का – १ – अच्छा...क्या है (दौड़कर उसके पास जाता है) ओ वाटसअप । किसकी डीपी देख रहा है ?

लड़का – २ – तेरी होनेवाली भाभी की । क्लास बंद करके जा रहा हूं उससे मिलने ।

लड़का – ३ – अबे ओ जानी लीवर, कहां जा रहा है...शकल है तेरी केला और और तू जाएगा उससे मिलने अकेला...।

लड़का – २ – शक्ल है तेरी गुड़ की ढेली, वो बुला रही है मेरी चेली...(सभी हंसते हैं)

(चौथे दृश्य से)

एक समूह – अल्ला हो अकबर

दूसरा समूह – हर हर महादेव (आपस में मार–काट का दृश्य । कोई भी झगड़े को शांत करने का प्रयास नहीं करता है । कुछ लोग पूरे घटनाक्रम का विडियो बनाते है तो कुछ तमाशा देखते है ।)

(पांचवे दृश्य में)

(ट्रैफिक पुलिस द्वारा रिश्वत लेना)

नेपथ्य से – ऐ पृथ्वी के वासियों क्या तुम्हें मैंने इसलिए बनाया था । तुम क्या आपस में मिल–जुलकर प्रेम और सद्भाव से नहीं रह सकते । मैं चाहता था कि तुममे मेरे गुण विकसित हों लेकिन तुम शैतान के चंगुल में फंसकर आज इस दशा को प्राप्त हुए हो । आखिर यह सब करके तुम हासिल क्या करना चाहते हो । इस बात को गांठ बांध लो कि शैतान तुम्हें मुझसे दूर ले जा रहा है । चेत जाओ वरना...बर्बाद हो जाओगे ।

(सारे लोग एक घेरा बना लेते है तभी एक वीभत्स अट्टहास के साथ एक आकृति उभरती है)

हम तंग आ चुके हैं इस जीवन से । तुमने हम सबको गुमराह किया है । तुम इंसानियत के दुश्मन हो । हम तुम्हारे बनाए हुए कायदे और कानून में नहीं रह सकता । मुझे तुमसे मुक्ति चाहिए । तुम ही हो जिसने हमें झूठ, फरेब और जिल्लत से भरी जिन्दगी दी है । हमें नशे की लत में डाला । हमें गलत राह पर ले आए तुम । हमारी जिंदगी बर्बाद मत करो हम तुम्हारे आगे हाथ जोड़ते हैं... चले जाओ इस धरा से...तुम जब तक हमारे बीच रहोगे हमें इसी कीचड़ में जीना पड़ेगा...चले जाओ..चले जाओ...। हमे चैन से जीना है । हमें मुक्ति दो ।

शैतान – (अट्टहास करते हुए) तुम्हे छोड़ दूंगा तो मेरा अस्तित्व ही नहीं रहेगा । तुम ही तो मेरी खुराक हो । तुम्हारे बिना मैं कुछ भी नहीं । (अट्टहास करता है, सभी परेशान होकर त्राहि–त्राहि कर रहे होते हैं ।)

(भगवान प्रकट होते हैं, सारी भीड़ भगवान की तरह हो जाती है । शैतान अपनी ताकत से भीड़ को अपनी तरफ खींचता है दोनो में रस्साकसी चलती रहती हैं)

भगवान – मैंने तुम्हें कितना कुछ दिया । तुम्हारे अंदर सोचने के लिए एक दिमाग डाला । तुम्हें विचार करने के लिए मुक्त बनाया । यह तुम्हारी सोच का ही परिणाम है जो आज तुम्हारी यह दशा हुई है । यह शैतान, जो तुम्हें अपने इशारों पर नचा रहा है तुम्हारे अंदर की ही शैतानी मनोदशा है । मैं, जिसने तुम्हें सब कुछ दिया और पाकर तुम मुझे भूल गए और शैतान के वश में आकर तुम जिन्दगी के मजे लेने का प्रयास करने लगे । मेरे लिए तुम्हारे मन में कोई जगह ही नहीं रही । तुम शैतान की भक्ति करने लगे तो जैसा करोगे वैसा ही तो भरोगे । तुमने भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिए मेरी अवहेलना कर डाली । मैं अब भी तुम्हारी सहायता कर सकता हूं । बस तुम्हें अपने अंदर के शैतान को मारकर मुझे अपने हृदय में बसाना पड़ेगा । हमेशा ध्यान रखना होगा कि मैं ही तुम्हारा वास्तविक स्त्रोत हूं । मैं वो सागर हूं जिसमें तुम जितना चाहो जल निकाल लो । तुम्हारी जरूरत खत्म हो जाएगी लेकिन जल खत्म नहीं होगा । अब निर्णय तुम्हें लेना है कि तुम्हें शैतान की जरूरत है या भगवान की ।

चार घोड़ों की कहानी

श्रीमती तन्वी कैलाश उचवानी
वरि. लिपिक - जन संपर्क अनुभाग

एक राजा के पास शारीरिक रूप से बलवान चार घोड़े थे । राजा इन घोड़ो को प्रशिक्षण दिलवाना चाहता था ताकि इनकी सुंदरता में चार चांद लग जाए । राजा किसी भी प्रशिक्षक को घोड़े को मारना, सख्ती बरतना, सजा देना ऐसी इज़ाज़त नहीं देता था । इसलिए अनेक प्रशिक्षक निष्फल होकर चले गए क्युंकि जैसे ही घोड़े की पीठ पर कोई प्रशिक्षक बैठता था, घोड़ा उसे उठाकर फेंक देते थे। राजा ने अपने पूरे राज्य में बात फैलादी कि जो भी इन घोड़ो को बिना सजा दिए प्रशिक्षित कर पाएगा उसे मुह मांगी रकम का पुरस्कार दिया जाएगा ।

एक दिन एक युवा प्रशिक्षक राजा की दरबार में आया राजा से बोला मैं आपके चारो घोड़ो को प्रशिक्षित करुंगा पर मेरी दो शर्ते हैं एक तो मुझे इन घोड़ो को प्रशिक्षित करने के लिए एक वर्ष का समय चाहिए । और दूसरी शर्त है कि इन घोड़ो को खिलाना-पिलाना पूर्ण देख-रेख की जिम्मेदारी मुझे सौंप दी जाए । राजा ने स्वीकृति दी ।

अगली सुबह एक बड़े मैदान में चारों घोड़ो को खुल्ला छोड़ दिया गया, चारों घोड़े पूरी आज़ादी से पूरे मैदान में टहलने लगे, इसके बाद प्रशिक्षक मैदान में घूमा और किनारे-किनारे पर खुद दौड़ने लगा, घोड़े भी यहां-वहां भागने लगे फिर जब रात हुई घोड़ो को खिला-पिलाकर रस्सी से बांधा खुद भी वहीं सो गया । सुबह होते ही घोड़ो को खोलकर खुद मैदान में दौडने लगा, घोड़े भी दौड़ने लगे, यही रोज होने लगा, दिन भर खूब प्यार करता, स्वयं खिलाता-पिलाता सहलाता, खेलता, शाम को घोड़ो के साथ सो जाता । धीरे-धीरे घोड़ो को यह प्रशिक्षक उनका दोस्त लगने लगा । क्योंकि जब से युवा प्रशिक्षक आया था घोड़े आज़ादी महसूस करने लगे थे, घोड़े अब प्रशिक्षक को प्यार करने लगे थे । छ: माह बीत गए। अचानक राजा एक दिन घोड़ो का प्रशिक्षण देखने आए, देखा कि घोड़ो के आगे-आगे प्रशिक्षक दौड़ रहा है और मेरे चारो घोड़े शिष्टता से उनके पीछे दौड़ रहे हैं । राजा को प्रशिक्षण पसंद आया । राजा चले गए और एक साल पूरा हो गया राजा को सूचना दी गई कि घोड़े शिक्षित हो चुके है । राजा उत्साहित होकर देखने आए, युवा प्रशिक्षक ने एक-एक घोड़े के उपर बैठकर लगाम पकड़कर सवारी करके दिखाई, सभी घोड़े आराम से मैदान के किनारे दौड़ रहे थे ।

राजा प्रसन्नोचित स्वर से पूछा ''तुमने इसे कैसे प्रशिक्षित किया ? प्रशिक्षक ने बताया मैने इनको पहले पूरी आज़ादी देकर अपना दोस्त बनाया । फिर धीरे धीरे इनके सामने दौड़ता था, मुझे देखकर यह भी दौड़ते थे । फिर मैंने इनकी पीठ पर गद्दी रखी, शुरू में गिरा देते थे, फिर धीरे धीरे गद्दी को पीठ पर लेकर दौड़ने लगे, फिर मैं इनकी पीठ पर बैठ जाता था । जब ये सिर्फ खड़े रहते थे सिर्फ कुछ देर बैठता था और उतर जाता था । जब ये घोड़े मुझे अपनी पीठ पर बिठाने लगे फिर मैने इनको दौड़ का लगाम दिया अब ये इनकी पक्की आदत बन गई है । राजा बहुत प्रसन्न हुए । अगले दिन राजा ने युवा प्रशिक्षक को मुँह मांगा इनाम दिया और घोड़ो की देखभाल के लिए उसे अपने यहा नौकरी पर रख दिया ।

इस कहानी का बोध है इंसान के मन में चार घोड़े होते है वो है चिंता, क्रोध, घमंड और लालच । कहानी में जो प्रशिक्षक है वो है आपकी बुद्धि आप स्वयं । आपको आपकी बुद्धि से इन चारो उदण्ड घोड़ो को दंड करना चाहिए । ताकि ये चारों आपके अंकुश में रहें ।

चिंता : चिंता करना समस्या का हल नहीं है बल्कि चिंतन करने से समस्या का हल मिलता है । हमें अपनी सकारात्मक सोच से इन चिंता के घोड़े को नियंत्रित करना सीखना चाहिए ।

क्रोध : क्रोध करने से किसी दूसरे का नुकसान हो न हो पर स्वयं का नुकसान जरूर होता है क्रोध करना कुछ जगहो पर आवश्यक है । जैसे कोई आपके मूल अधिकारो का हनन कर रहा हो, अकारण ही आपको गाली दे रहा हो, तो क्रोध करना उचित है पर कब, कहां और कितना क्रोध करना यही इस क्रोध के घोड़े को सिखाना चाहिए ।

घमंड : यह कार्य मैं कर सकता हूं । इसे गर्व कहते है, पर यह काम सिर्फ मैं ही कर सकता हूं, इसे घमंड कहते है । यही भेद अपनी बुद्धि से इस घमंड के घोड़े को समझाना चाहिए ।

ललाच : लालच ज्ञान का हो तो अच्छा है लालाच अज्ञानता का हो तो बुरा है लालच सही तरीके से, महेनत से, बुद्धि से, धन कमाने का हो तो अच्छा है, लालच जल्दी से, गलत तरीके से धन कमाने का हो तो बुरा है । यह भेद इस घोड़े को समझाना चाहिए ।

आप अपने मन की बुराई को समझते हुए धीरे धीरे अभ्यास से सुधार ला सकते है उसके लिए आपको इनसे दोस्ती करनी होगी अर्थात् इन चारों की कार्यप्रणाली को समझकर इन पर लगाम लगाना होगा, यह धीरे-धीरे संभव है, अचानक से नहीं ।

बात बेहद खटकी

श्रीमती संगीता खिलवानी
सहायक, सिविल अभियांत्रिकी विभाग

देखा जब मैंने,
माँ को दादी पे गुस्सा करते एवं
नानी पे प्यार बरसाते,
बात बेहद खटकी ।

देखा जब मैंने, पापा को
बेकार के खर्चे करते एवं
दादाजी को दवाओं के पैसो के लिए,
पल-पल तरसाते,
बात बेहद खटकी ।

देखा जब मैंने बुआ को
मायके आकर पति की बुराइयां करते
और फिर उसी पति के साथ
पार्टियाँ करके, शराब का पैग लगाते,
बात बेहद खटकी ।

देखा जब मैने चाचा को,
अंतर्रजातीय विवाहों का
विरोध जताते एवं
फिर अपनी ही बेटी का विवाह,
एक धनी मराठी मालधारी के पुत्र से कराते,
बात बेहद खटकी

देखे ऐसे बहुत से,
सदैव सच का राग गाते,
परंतु फिर निज स्वार्थ के खातिर,
खुशी-खुशी झूठ को है अपनाते,
बात बेहद खटकी

देखा मैंने खुद के अंदर
पाया एक लालची मन,
वैसे तो आप भी मुझे देखते होंगे,
निष्पापी होने का ढोंग रचाते,
बात बेहद खटकी

''मैं नतमस्तक हो गया हूँ''

श्री नितेश एम. सोलंकी
क्रेन ड्राईवर

कंडला की क्रेन चलाते चलाते
मैं बहुत ही अभिभूत हूँ,

चावल, चीनी का निर्यात करते,
खाड़ी देश की आंतो को ठंडा करता देख
मैं बहुत ही अभिभूत हूँ

देखा है मैंने तूफान और बाढ़ यहाँ
इसके सामने दृढ मन से सामना करते कंडला से
मैं बहुत ही अभिभूत हूँ,

भूकंप के बाद कोरोना के सामने
टक्कर लेते हुए इस कंडला की अडिगता देख
मैं बहुत ही अभिभूत हूँ,

कार्गो हो तरल या सामान्य
दूर-दूर तक गैस भेजते कंडला से
मैं बहुत ही अभिभूत हूँ,

हमारे क्रेन से भी लंबी और चौड़ी
मशीनों को लोड कर कीर्तिमान कंडला से
मैं बहुत ही अभिभूत हूँ,

हमेशा सभी बंदरगाहों से आगे रहते
हमेशा नंबर वन रहे ऐसे कंडला से
मैं बहुत ही अभिभूत हूँ,

हर साल नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए कटिबद्ध
होशियार कर्मचारी की कड़ी मेहनत पर
मैं बहुत ही न्यौछावर हो गया हूँ,

प्रसिद्धि के शिखरों को छूते
केंद्रीय मंत्री का स्वागत करते मैने कंडला को देखा
मैं नतमस्तक हो गया हूँ,

हाँ मैं एक क्रेन ड्राइवर हूँ
सभी कार्गो के आयात और निर्यात में सहभागी हूँ
कंडला की हुई प्रगति को देखकर
मैं भावुक हो गया हूँ,

दृढ मन से हर चुनौती का सामना किया
उत्तरोत्तर प्रगति करते कंडला को देख
मैं नतमस्तक हो गया हूँ ।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ

75 वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण के पश्चात सलामी देते हुए अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता, भा.व.से.

26 अगस्त 2021 को सचिव श्री सी.हरिचंद्रन जी की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम की छमाही समीक्षा बैठक का ऑनलाइन आयोजन किया गया ।

14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल जी ने हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया ।

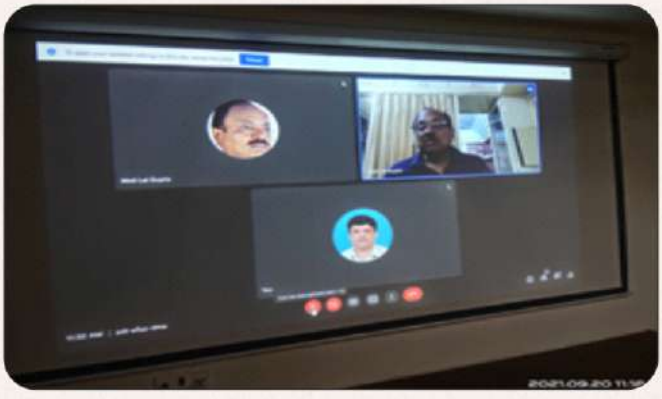

20 सितम्बर 2021 को कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गयी । इसमें 24 कार्मिकों ने भाग लिया जिसमें उपनिदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, मुंबई डॉ. एम.एल. गुप्ता जी ने ऑनलाइन जुड़कर विद्वतापूर्ण व्याख्यान से प्रशिक्षण प्रदान किया ।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों में कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा उत्साहपूर्ण ढंग से बढ़ चढ़ कर भाग लिया गया ।

हिन्दी पखवाड़ा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में संबोधित करते हुए उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस

राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार की शील्ड एवं प्रमाणपत्र चिकित्सा विभाग को प्रदान किया गया ।

उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही समीक्षा बैठक आयोजित हुई जिसमें विभाग प्रमुखगण एवं नोडल अधिकारियों ने भाग लिया ।

पोर्ट की छमाही हिन्दी गृहपत्रिका 'लहरों का राजहंस' के ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित 21वें अंक की एक झलक ।

राष्ट्रभाषा सर्वसाधारण के लिए जरूरी है और हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी ही बन सकती है – लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान ''आजादी का अमृत महोत्सव'' के आयोजन संबंधी झलकियाँ

गुजरात उच्च न्यायालय की अभिवक्ता श्रीमती पारुल सोनी जी द्वारा
''कार्यस्थल पर महिला यौन उत्पीड़न'' के निवारण के लिए व्याख्यान दिया गया ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के वरिष्ठ उप चिकित्सक,
डॉ. महेश बापट जी द्वारा ''डेंगू और तनाव जैसी समस्याओं
से कैसे बचा जाय'' इस विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सम्पूर्ण विकास को दर्शाती
हुई एक लघु वृत्तचित्र फिल्म छात्रों को दिखाई गई ।

डॉ. धैवत डी. मेहता जी द्वारा
'मानवीय जीवन पर कोरोना का मनोवैज्ञानिक असर'
विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया ।

कर्मचारियों और उनके परिजनों के लिए
''आत्मरक्षा तकनीक प्रशिक्षण'' आयोजित किया गया ।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान ''आजादी का अमृत महोत्सव'' के आयोजन संबंधी झलकियाँ

आजादी के भाव को पुनर्जीवित करने हेतु प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन ।

देश भक्ति की भावना को प्रदर्शित करते हुए एकल अभिनय का दृश्य ।

निबंध प्रतियोगिता के विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया ।

कर्मचारियों के परिजनो को योगाभ्यास करने हेतु उपाध्यक्ष श्री द्वारा सम्मानित किया गया ।

''गुजरात राज्य योग बोर्ड'' के योग प्रशिक्षक श्री जनार्दन पाटनकर जी द्वारा कर्मचारियों, अधिकारियों एवं उनके परिवार जनों को योग का ज्ञान दिया गया ।

''हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है ।'' -मदन मोहन मालवीय

कर्म का फल

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
भंडार अनुभाग

नदी के किनारे बसा हुआ एक सीतापुर गाँव । गाँव के सब लोग अपने मुखिया से बहुत ही खुश रहते थे ।

न्यायप्रिय मुखिया संतासिंघ के पास जो भी गाँववाला अपनी परेशानी या शिकायत ले जाता, संतासिंघ मुखिया बहुत ही चतुराई एवं खूबी के साथ उनकी परेशानी दूर कर देता एवं दोनों पक्ष की बात सुनने के बाद ही सही निर्णय सुनाकर उनकी शिकायते दूर कर देता था । एवं दोनो पक्ष खुशी-खुशी मुखिया की बात का मान रखते थे । मुखिया संतासिंघ हर रोज रात को भेष बदलकर पहरेदार का रूप करके गाँव की खैर खबर लेता था । गाँववाले समझते थे कि गाँव की सुरक्षा के लिए मुखिया ने पहरेदार रखा हुआ है ।

एक रात मुखिया पहरेदार का भेष बदलकर गाँव के नुक्कड पर गया । वहाँ उसने तीन दोस्त को आपस में बातें करते सुना । मुखिया बोला क्या मैं आपके साथ बातें कर सकता हूँ । तीनों दोस्त मुखिया के साथ बाते करते गए बातों-बातों में पता चला कि वो तीनों इसी गाँव के रहने वाले हैं । एक ने कहा मुखिया तो मैं भी बन सकता हूँ । ऐसा क्या है संतासिंघ में, न्याय तो मैं भी कर सकता हूँ । ये बात मुखिया संतासिंघ के मन में घर कर गई । रोज़ सोचने लगा कि ये सही बात है भगवान ने मुझे ही क्यों चुना मुखिया ? मुखिया ने पंचायत बुलाई और बोला कि आप सब लोगों ने मुझे हीं क्यों मुखिया बनाया है ? जो भी इस बात का सही जवाब देगा उसे मैं गाँव की कुछ जमीन उसको दूंगा । हर एक ने अपनी-अपनी कही, लेकिन मुखिया को उनका जवाब नहीं भाया ।

उसी समय साधुओं की एक टोली वहाँ से गुजरी और मुखिया एवं गाँववालों की बातें सुनी । उन में से एक साधु संत पहुँचा हुआ भगवान का सच्चा भक्त बोला, मुखिया जी आपके प्रश्न का उत्तर पहाड़ पर रहने वाला भिखारी देगा । मुखिया घोड़े पर सवार होकर उस भिखारी के पास जा पहुँचा । भिखारी को पूछाँ कि सीतापुर गाँव का मुखिया मैं ही क्यों बना ? तब भिखारी ने उत्तर दिया तेरे प्रश्न का उत्तर दूर पेड़ के पास रहने वाला कंगाल व्यक्ति ही दे सकता है । मुखिया घोड़े पर सवार होकर उस कंगाल व्यक्ति के पास जा पहुँचा और अपना प्रश्न दोहराया । तब उस कंगाल व्यक्ति ने कहा दूर एक गुफा में भूखा, प्यासा, लंगड़ा, बीमार आदमी ही आपके इस सवाल का जवाब देगा । मुखिया संतासिंघ घोडे पर सवार होकर गुफा को ढूंढते हुए इस भूखे, प्यासे, लंगड़े, बीमार व्यक्ति के पास गया और बोला मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर दो कि मैं ही सीतापुर गाँव का मुखिया क्यों बना ? उस बीमार आदमी ने ऊपर से नीचे तक मुखिया को देखा और बोला पिछले कई सालों की बात है । जब हम चार दोस्त हुआ करते थे । रोज मंदिर के बाहर हम मिला करते थे । और मंदिर का प्रसाद लेकर चारों साथ मिलकर पेड़ के नीचे आकर खाते थे । एक दिन हम चार दोस्त वो प्रसाद लेकर खाने ही बैठे थे कि एक बुड्ढा बीमार भूखा आदमी हमारे से खाने की मांग की । बोला बहुत दिनो से भूखा हूँ । खाना खिलाओ थोड़ा-सा । लेकिन जो पहला बैठा था उसने बोला चल बे भिखारी तेरे को मैं अपने हिस्से का खाना दूंगा तो मैं भूखा रहा जाऊंगा । फिर उस बुड्ढा ने दूसरे दोस्त को बोला कि कुछ मुझे भी खिला दो । दूसरे ने बोला तुमको खाना देकर मैं तो कंगाल हो जाऊंगा । तब तो तीसरे के पास गया यानी मेरे को बोला मैं उस पर हँस पडा और बोला चल बे लंगड़े बुड्ढे बीमार, तुमको मैं अपने हिस्से का खाना दूंगा तो मैं तो भूखा प्यासा रह जाऊंगा ।

लेकिन तुमको उस बुड्ढे बीमार पर दया आ गई तुमने अपना प्रसाद उसे खाने को दे दिया । धीरे-धीरे हम बड़े हो गए। और अलग-अलग जगह पर जा बसे । आज हम तीनों ने जो बोला उस बुड्ढे आदमी को वो ही हम बन गए और तुम दया करके नेक दिल इन्सान बने तब तुम न्यायप्रिय मुखिया बन गए हो । मुखिया सब समझ गया कि भगवान हमको जो कुछ भी खाने को देता है वो मिल बांटकर खाना चाहिए एवं अपने ही मुख से निकली हुई बात आगे चलकर हमको ही चुभ जाती है ।

तभी तो कहा गया है कि हर एक की वाणी में सरस्वती बसती है । जब भी बोले सोच समझकर एवं मीठा ही बोलना चाहिए। पलटकर हमको ही उसका जवाब मिलता है । जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल पाओगे । दया का भाव रखने वालों को

सुख और दुःख

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक,
सामान्य प्रशासन विभाग

जिस तरह से सिक्के के दो पहलू होते है उसी तरह से संसार की प्रत्येक चीज या परिस्थिति के दो पहलू होते है। जिस तरह से अंधेरी रात के बाद सुनहरी सुबह का होना, एक मौसम के बाद दूसरे मौसम का आना, हार के बाद जीत का होना, निराशा के काले बादलो के बाद आशा की किरण का रोशन होना, निश्चित है । ठीक उसी तरह से दुःखो के बाद सुखो का आना भी निश्चित ही है । जिस तरह से सिक्के के दोनों पहलू हमेशा एक दूजे के साथ साथ रहते है, उसी तरह से दिन और रात– अंधेरे और उजाले, प्रकृति के मौसम, आशा और निराशा तथा सुख और दुख भी हमेशा एक दूसरे के संग संग ही रहते है ।

इस धरती पर कोई भी चीज स्थायी नही है । वक्त और जरूरतो के अनुसार हर चीज बदलती रहती है । इंसान की रुचि बदलती रहती है, खाने पीने का स्वाद बदलता रहता है, जीने का उद्देश्य बदलता रहता है फिर सुख या दुख कैसे स्थायी हो सकते है ।

सुख और दुख तो एक अनुभूति है, जो इंसान के विचारों उसकी इच्छाओ और उसकी जरूरतो के अनुसार बदलती रहती है । अगर इंसान के इच्छानुसार कोई कार्य होता है तो वह संसार के लिए सुख बन जाता है परंतु अगर इंसान के सोच के अनुसार जब कर्म नहीं होता है तो वह कार्य इंसान के लिए दुख का कारण बन जाता है । ज्यादा और बड़ी बड़ी इच्छाएं रखने से उन इच्छाओ के पूर्ण न होने पर इंसान स्वयं ही मन से दुखी हो जाता है ।

इंसान के दुखी होने का सबसे बडा कारण है मन में संतोष की कमी । जब इंसान का अपने मन पर काबू नहीं रहता है, मन में लालच का जोर चलता है और सामने वाले से अपेक्षाओं में जब वृद्धि होती है, तब इंसान किसी भी परिस्थिति में कभी भी खुश नहीं रहता है । कितना भी अच्छा उसे क्यों न प्राप्त हो पर वह उससे कभी भी संतुष्ट नहीं होता है और हर दम दुखी ही रहता है ।

जिन्दगी में अगर खुश रहना है और दुखों से बाहर निकलना है तो सबसे पहले इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि जीवन की राह चाहे कितने ही अंधेरो से भरा हो लेकिन उस राह के अंत में उजालो की रोशनी अवश्य ही प्रकाशित होगी । दूसरा निराशा का दामन छोड़कर नकारात्मक विचारो को त्यागकर मन में आशा एवं सकारात्मकता का दीप जलाना होगा । तीसरा अपने मन पर काबू रखकर – अपने मन में संतोष की ज्योति को जलाकर अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं पर काबू पाना होगा – फिर हमें सुखी होने से कोई नहीं रोक पाएगा ।

पर्यावरण और खुद की रक्षा

पर्यावरण को देखो ऐसे ही,
दूषित यूँ न तुम करों ।
प्रकृति से खेल कर यूँ ही
विपदाओं को आमंत्रित न तुम करों ।

नदियों और जलाशयों के जल को,
कचरे से दूषित न यूँ करों ।
जल तो अमृत है उसमें
बिमारियों का विष न तुम भरो ।

आधुनिकता को यूँ अपनाकर,
अपने ही जीवन से न खिलवाड़ करो ।
पेड़, पौधों व स्वच्छता को अपनाकर,
पर्यावरण और खुद की रक्षा तुम करो ।

अपने निजी स्वार्थ के खातिर,
वनो, को यूँ न नष्ट करों ।
बारिश के दरवाजों को बन्द करके,
फसलों को न नष्ट तुम करो,

वायू में रसायनो के समन्वय को
मिश्रित यूँ न तुम करो ।
शुद्ध और जीवनदायी हवा को
आत्मघाती में यूं न परिवर्तित करो ।

श्री हरिवंशराय बच्चन जी की कृति से संकलित

श्री हरीश एच. बचवाणी
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग

रब ने नवाजा हमें जिंदगी देकर,
और हम ''शौहरत'' मांगते रह गये,
जिंदगी गुजार दी शौहरत के पीछे
फिर जीने की ''मौहलत'' मांगते रह गये ।
ये कफ़न, ये जनाजे, ये ''कब्र'',
सिर्फ बाते हैं मेरे दोस्त,
वरना मर तो इंसान तभी जाता है,
जब याद करने वाला कोई न हो...।

ये समंदर भी तेरी तरह खुदगर्ज निकला
जिंदा थे तो तैरने न दिया और
मर गए तो डूबने न दिया
क्या बात कर इस दुनिया की
''हर शख्स के अपने अफसाने है''
जो सामने हैं उसे लोग बुरा कहते हैं,
जिसको देखा नहीं उसे सब ''खुदा'' कहते है ।

पेड़ों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

सुश्री गीता त्रिपाठी
डी.ई.वी.ओ., ई.डी.पी. अनुभाग

- पेड़ धरती पर सबसे पुरानें सजीव अंगी है, और ये कभी भी ज्यादा उम्र की वजह से नहीं मरते ।
- हर साल 5 अरब पेड़ लगाए जा रहे है लेकिन हर साल 10 अरब पेड़ काटे भी जा रहे है ।
- एक पेड़ दिन में इतनी ऑक्सीजन देता है कि 4 आदमी जिंदा रह सकें ।
- देशो की बात करें, तो दुनिया में सबसे ज़्यादा पेड़ रूस में है उसके बाद कॅनाडा में उसके बाद ब्राज़ील में फिर अमेरिका में और उसके बाद भारत में केवल 35 अरब पेड़ बचे हैं ।
- दुनिया की बात करें तो 1 इंसान के लिए 422 पेड़ बचे है, लेकिन अगर भारत की बात करें, तो 1 हिंदुस्तानी के लिए सिर्फ 28 पेड़ बचे हैं ।
- पेड़ो की कतार धूल–मिट्टी के स्तर को 75% तक कम कर देती है, और 50% तक शोर को कम करती हैं ।
- एक पेड़ इतनी ठंड पैदा करता है जितनी 1 AC 10 कमरों में 20 घंटो तक चलने पर करता है, जो इलाका पेड़ो से घिरा होता है वह दूसरे इलाकों की तुलना में 9 डिग्री ठंडा रहता है ।
- पेड़ अपनी 10% खुराक मिट्टी से और 90% खुराक हवा से लेते है ।
- एक एकड़ में लगे हुए पेड़ 1 साल में इतनी कार्बन डाईऑक्साईड सोख लेते है जितनी एक कार 41,000कि.मी. चलने पर छोड़ती है ।
- दुनिया की 20% ऑक्सिजन अमेजन के जंगलो द्वारा पैदा की जाती है, ये जंगल 8 करोड़ 15 लाख एकड़ में फैले हुए है ।
- इंसानो की तरह पेड़ो को भी कैंसर होता है, कैंसर होने के बाद पेड़ कम ऑक्सीजन देने लगते हैं ।
- पेड़ की जड़े बहुत नीचे तक जा सकती है, दक्षिण अफ्रिका में एक अंजीर के पेड़ की जड़े 400 फीट नीचे तक पाई गई थी ।
- दुनिया का सबसे पुराना पेड़ स्वीडन के डलारना प्रांतमें है, टीजिक्को नाम का यह पेड़ 9,5550 साल पुराना है ।
- किसी एक पेड़ का नाम लेना मुश्किल है लेकिन तुलसी,पीपल,नीम और बरगद दूसरों के मुकाबले ज्यादा ऑक्सिजन पैदा करते है।
- इस बरसात में कम से कम एक पौधा अवश्य लगायें
''स्वयं जगें लोगों को जगाएं'' '' मिलकर पर्यावरण बचाएँ ।'' आईये इस धरा का सौदर्य, वृक्ष लगा कर बढ़ायें ।

''हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है ।'' –डॉ. सम्पूर्णानन्द

खुदा के गुलाम

कु. फातिमा बोहरा
प्रबंधन प्रशिक्षार्थी
समुद्री विभाग

इब्राहिम बल्ख के बादशाह थे । सांसारिक विषय – भोगों से ऊबकर वे फकीरों का सत्संग करने लगे । बियाबान जंगल में बैठकर उन्होंने साधना की । एक दिन उन्हें किसी फरिश्ते की आवाज सुनाई दी, मौत आकर तुझे झकझोरे इससे पहले ही जाग जा ।

अपने को जान ले कि तू कौन है और इस संसार में क्यों आया है । यह आवाज सुनते ही संत इब्राहिम की आँखो से आंसु बहने लगे । उन्हें लगा कि बादशाहत के दौरान अपने को बड़ा मानकर उन्होने बहुत गुनाह किया है । वे ईश्वर से उन गुनाहों की माफी माँगने लगे ।

एक दिन वह राजपाट त्यागकर चल दिए । निशापुर की गुफा से एकांत साधना कर उन्होने काम, क्रोध, लोभ आदि आंतरिक दुश्मनों पर विजय पाई । वे हज यात्रा पर भी गए और मक्का में भी पहुँचे हुए फकीरो का सत्संग करते रहे ।

एक दिन वे किसी नगर में जा रहे थे कि रास्ते में एक चौकीदार ने पूछा,''तू कौन है ?'' उन्होने जवाब दिया, 'गुलाम' । उस चौकीदार ने फिर पूछा तू कहाँ रहता है ? तो इस बार जवाब मिला 'कब्रस्तान में ।'

चौकीदार ने उन्हे मसखरा समझकर कोडे लगा दिए पर जैसे ही उसे पता चला कि वे पहुँचे हुए संत इब्राहिम है तो वे उनके पैरो में गिरकर क्षमा माँने लगा । संत ने कहा ''इसमें आखिर क्षमा माँगने की क्या बात है ? तूने ऐसे शरीर को कोड़े लगाए है जिसने बहुत वर्षों तक गुनाह किए है ।''

कुछ क्षण रुककर उन्होने कहा 'सारे मनुष्य खुदा के गुलाम है और गुलामो का अंतिम घर तो कब्रस्तान ही होता है ।

ऐसी ही हूँ मैं

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
भंडार अनुभाग

यूँ ही अपने होठों की हँसी से खुद को संभाल लेती हूँ मैं...
टूट कर कितना बिखरी हुई हूँ, पर्दा डाल लेती हूँ मैं...

रिश्ते हैं जो जख्म... खुद ही उन्हें संभाल लेती हूँ मैं...
घायल हूँ, भीतर तक, गम को हँसी में उछाल देती हूँ मैं...

देखा है रिश्तों को बड़े नजदीक से टूटते हुये
जो नहीं चाहते साथ मेरा, हँसकर जुदा कर देती हूँ मैं...

रिश्तो की रूस्वाई नहीं करती, कमजोर हूँ नुमाइश नहीं करती...
लड़खड़ा कर संभाल कर, सीखकर, मुस्कुराती हुई
फिर से हँसते हुए नयी मंजिल की ओर कदमो को बढ़ा देती हूँ मैं...

जिनको भाती है , उनको दिल से लगाकर ताउम्र निभाती हूँ मैं
जिनको पसंद नही...उनसे भी हँसकर हाथ मिलाती हूँ मैं...

ऐसी ही हुँ मैं...वैसी ही हूँ मैं...जैसी भी हूँ... वैसी ही हूँ मैं...
नही चाहती खुद को बदलना, मरने तक ऐसे ही रहना चाहती हूँ मैं...

हर गम को अपनी हँसी से बदलना चाहती हूँ मैं...
लोगों के मुस्कुराने की वजह बनना चाहती हूँ मैं...

हँसती हुई इस दुनिया से जाना चाहती हूँ मैं...
फना के बाद भी अपनी हँसी को पहचान बनाना चाहती हूँ मैं...

मुस्कुराती हुई जाना चाहती हूँ मैं...।।

एकांत सर्जन की जरूरत

कु. हिमालय उचवानी
सुपुत्र - श्री कैलाश उचवानी
सांख्यिकीय सहायक - यातायात विभाग

एक बार की बात है । मैं अपने मित्र राहुल की शादी में अपनी बीवी और पुत्री के साथ गया था । शादी ब्याह के इस अवसर पर रिश्तेदारों का उत्साहपूर्वक स्वागत हो रहा था । शाम के संगीत का कार्यक्रम चालु हुआ, संगीत का कार्यक्रम आरंभ होते ही छोटे-छोटे बच्चे नाचने लगे मेरी पांच वर्षीय पुत्री भी घुलमिल कर बच्चों के साथ नाचने लगी । बीवी बोली, ''आजकल कौन घर में संगीत का कार्यक्रम रखता है। मुझे तो प्रिंस की शादी, जो होलिडे विलेज रिसोर्ट में हुई थी उसकी याद आ रही है वो डी.जे.!'' । मैं शांत था । धीरे-धीरे मामाजी-मामियां, मौसाजी-मौसियां, चाचाजी-चाचियां, फुफाजी-बुआएं, बच्चे, मैं और मेरी बीवी उनके साथ मिलकर आनंदपूर्वक नाचने लगे और पाँच घंटे बीत गए, राहुल के दादा और उनके भाई की उम्र 80 वर्ष थी वे भी संगीत कार्यक्रम का आनंद ले रहे थे ।

इसके पश्चात, रात्री में हम ने साथ में भोजन किया जिससे मैं बहुत ही भाव विभोर हो रहा था क्यूंकि दोस्तो, भारत में अब धीरे-धीरे पारिवारिक संबंध अदृश्य हो रहे हैं । पहले हर बच्चे के पास उसके माता-पिता के अलावा, चाचा, ताऊ, बुआ, मामा, मौसी जैसे ढ़ेरो रिश्तेदार हुआ करते थे । लेकिन अब भारतीय परिवारों में रक्त के ये कुल पांच रिश्ते समाप्त होने की कगार पर है एक दो पीढ़ी के बाद संभवत: ऐसा हो जाएगा ।

यदि किसी दंपति के पास दो पुत्र और दो पुत्री है तो उन्हें ये सभी रिश्ते मिलेंगे, रिश्ते जिंदा रहेंगे । दूसरा यदि किसी दंपती के पास दो पुत्र और एक पुत्री है तो उसके लिए ताऊ, चाचा, बुआ और मामा का प्यार मिलता रहेंगा । नहीं तो किसी भी बच्चे के लिए इस दुनिया में माँ के बाद सगी महिला का रिश्ता मौसी का होना उसके सर्वांगी विकास में सहायक होता है । तीसरा यदि किसी दंपती के पास एक पुत्र और एक पुत्री है तो उनके लिए सिर्फ मामा और बुआ का रिश्ता जिंदा है बाकी के तीन रिश्ते कुचल गए हैं । चौथा यदि किसी दंपति के पास एक पुत्र और दो पुत्री है तो कहानियाँ सुनाने वाले ताऊ और चाचा तो नहीं मिलेंगे, परंतु मामा - मामी और बुआ का अटूट प्यार मिलेगा । पाँचवा यदि किसी दंपति के पास सिर्फ एक पुत्र या सिर्फ एक पुत्री है तो कोई रक्त संबंधी रिश्ता नहीं, ब्रह्मांड में अपने आप को पूरा अकेला महूसस करने की स्थिति होगी ।

हमारे देश के ऋषि एकांत में सांधना किया करते थे वो अकेले में रहते थे पर अकेलेपन में नहीं । जैसे योग की चरम सीमा की अवस्था में जो एकांत का अनुभव होता है वो व्यक्ति को योगी बना देता है । बड़े-बड़े साहित्यकार, कलाकार, अक्सर अपनी रचना के लिए एकांत की तलाश में रहते हैं, यहाँ तक कि वैज्ञानिक भी एकांत, बड़े-बड़े पत्रकार, लेखक भी एकांत में बैठकर अपनी रचना का सर्जन करते हैं, दुनिया भर के बड़े-बड़े शायरों के लिए एकांत एक मनपसंद विषय है । अकेलेपन पर आधारित कई गीत, फिल्म, दु:ख भरे नगमे हंमेशा जनता का दिल जीत लेते है ।

इस तरह एकांत सर्जन की जरूरते है और कई बार व्यक्ति अकेला हो तो सर्जन क्षमता बढ़ जाती है ।

यदि आप अकेले हैं तो खुद से संवाद कीजिए ।

''हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है ।'' - मौलाना हसरत मोहानी

स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी, बेरिस्टर एवं राष्ट्रवादी पत्रकार

कच्छ के सपूत पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा

श्री सतीश मोता
सहायक, वित्त विभाग

भारत देश को गुलामी की ज़ंजीरों से मुक्त करने के लिए अनेक राष्ट्रप्रेमी लोगों ने अपने सर्वोच्च बलिदान दिये है । कई लोगों को हम जानते है कई गुमनामी के अंधेरे में अपना जीवन न्यौछावर करके राष्ट्रप्रेम की ज्योत जला के चल बसे । आज हम कच्छ की धरती के सपूत, विद्वान, निडर, ज़ाबाज़ एवं प्रखर राष्ट्रवादी पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा जी के जीवन कार्य एवं आजादी के आंदोलन में उनकी भूमिका के बारे मे जानेंगे ।

प. श्याम जी का जन्म 04-10-1857 को कच्छ मांडवी में हुआ था । प्रारम्भिक अभ्यास मांडवी में करने के बाद आगे का अध्ययन विल्सन हाईस्कूल, मुंबई एवं ओक्स्फर्ड यूनिवर्सिटी, ब्रिटेन से उन्होंने बेरिस्टर एट लो की डिग्री प्राप्त की थी । पढ़ाई में अत्यंत तेजस्वी होने की वजह से ओक्सफर्ड युनिवर्सिटी में संस्कृत के प्रोफेसर पद पर भी उन्हें कार्य करने का निमंत्रण मिला था । वैदिक फिलोसोफी के प्रचार प्रसार के कार्य को भी उन्होंने गंभीरता से लिया था अत: काशी के पंडितो द्वारा उन्हें पंडित की उपाधि भी प्रदान की गई थी । ब्रिटेन में रॉयल एशियाटिक सोसायटी के सभ्य होने के नाते उस समय के विद्वान एवं प्रतिष्ठित लोगों से उनका परिचय हुआ ।

पढ़ाई के बाद जब भारत वापस आए तो रतलाम स्टेट के दिवान, अजमेर में वकालत एवं दीवानपद तथा जूनागढ़ के दीवान एवं उदयपुर के महाराजा के साथ काउंसिल मेम्बर के रूप में कार्यरत रहे । सन 1897 में बाकी जीवन भारत माता की स्वतंत्रता संग्राम में कार्य करने हेतु भारत छोड़कर ब्रिटेन गए । वहाँ उन्होंने इंडियन सोश्योलॉजिस्ट नाम से एक प्रकाशन को चालू किया एवं इंडियन होमरुल सोसायटी की स्थापना की । स्वतंत्रता संग्राम हेतु नव युवकों को संगठित करने के लिए इंडिया हाउस की भी स्थापना की गई । उसी समय में शिवाजी फेलोशिप पर वीर सावरकर इंडिया हाउस पहुंचे थे । उनके निकट के सहयोगी मैडम कामा ने उस समय के दौरान ही प्रथम भारतीय ध्वज का निर्माण करके जर्मनी में लहराया था । श्यामजी की भारत की स्वतंत्रता के लिए की जाने वाली ऐसी प्रवृतियों को देख के अंग्रेज़ सरकार ने उनकी बेरिस्टर की डिग्री वापस ले कर उन्हें इन्नर टेंपल कमिटी से रूखसर दे दी गई । इंडिया हाउस को सील किया गया और उनके साथी मदनलाल ढींगरा को भी फांसी दे दी गई । इन सब कार्यवाही के चलते श्यामजी ने इंडियन सोश्योलॉजिस्ट के प्रकाशन को पेरिस ले जाने का फ़ैसला किया एवं खुद जिनेवा स्थानांतरित हो गए । आजादी के इस संग्राम को विदेशी धरती पर रहकर चलाने वाले श्यामजी के मुख्य साथियों में वीर सावरकर, गणेश सावरकर, मैडम कामा (मदन तलवार मेगजीन के संपादक), सरदारसिंह राणा, लाला हरदयाल (वंदे मातरम नामक मासिक प्रकाशन के तंत्री), पी. एन. बापट, विरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, मदनलाल ढींगरा जैसे कई राष्ट्रीय फ़लक के स्वातंत्र्यवीरोंने उनके साथ मिलकर विदेशों में भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई को चालू रखा ।

इंडियन होमरूल सोसायटी का मुख्य हेतु भारत को स्वतंत्र करना, इसके लिए ब्रिटेन एवं पश्चिम के देशों में रहकर जो भी व्यवहारिक कदम उठाने पड़े वो उठा के उसके लिए प्रचार-प्रसार का कार्य करना एवं राष्ट्रीय एकता एवं स्वतंत्रता के फायदे के बारे में भारत के लोगों को जागरूक करना था । स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए श्यामजी ने विगठन के सिद्धांत को प्रचलित किया था जिसमें ब्रिटिश सरकार की किसी भी योजना में भारतीय पैसो का निवेश नहीं करना, भारत के नाम पर अंग्रेजो द्वारा किए गए कर्ज के प्रति असहमति व्यक्त करना, अंग्रेज सरकार की सभी नौकरी का अस्वीकार एवं अंग्रेज सरकार द्वारा अनुदानित सभी सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार तथा भारत के सभी सॉलिसीटर एवं बेरिस्टरों द्वारा भारतीय न्यायालयों का बहिष्कार जैसे कदम समाविष्ट थे ।

पर्यावरण को बचाने की लो राह, बंद करो ये पॉलिथीन का उपयोग ।

सन 1989 में स्वतंत्र सेनानी शृंखला के अंतर्गत उनकी स्मृति में डाक टिकट प्रसिद्ध करके उन्हें श्रद्धांजलि दी गई थी। इन्नर टेंपल द्वारा जो बेरिस्टर की डिग्री को सन 1909 में निरस्त किया गया था उसे सन 2015 में बहाल किया गया।

विदेशी धरती पर रहकर भारत की स्वतन्त्रता की ज्योति जलाने वाले श्यामजी का 1930 में जिनेवा में देहांत हो गया। उनकी आखिरी इच्छा थी कि जिस मकसद के लिए अपना पूरा जीवन कुर्बान किया है उस मकसद की सफलता के बाद स्वतंत्र भारत में उनके और उनकी पत्नी के अस्थियों को विसर्जन किया जाये। आजादी के 55 साल के बाद और उनके मृत्यु के 73 साल पश्चात उनके अस्थियों को भारत के प्रधान मंत्रीश्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयासों से वापस लाया गया। पूरे देश में अस्थि कलश यात्रा के बाद मांडवी के पास क्रांतितीर्थ नामक स्थल पर श्यामजी एवं उनके धर्मपत्नी के अस्थियों को स्मारक बनाकर उन्हे आहुति दी गई। इस तरह स्वामी दयानन्द सरस्वती के धार्मिक, समाजिक एवं क्रांतिकारी विचारो के समर्थक श्यामजी का पूरा जीवन राष्ट्र भक्ति करते करते माँ भारती के चरणों में न्यौछावर हो गया। अस्तु।

अंतिम ऊँचाई

कुमारी मोनिका टी. लोचानी
आई.टी. हेल्पडेस्क,
ई.डी.पी. अनुभाग

कितना स्पष्ट होता आगे बढ़ते जाने का मतलब
अगर दसो दिशाएं हमारे सामने होतीं
हमारे चारो ओर नहीं।

कितना आसान होता चलते चले जाना
यदि केवल हम चलते होते
बाकी सब रूका होता।

मैंने अक्सर इस उल-जुलूल दुनिया को
दस सिरों मे सोचने और बीस हाथों मे पाने की
कोशिश में
अपने लिए बेहद मुश्किल बना दिया है।

शुरू-शुरू में सब यहीं चाहते हैं
कि सब कुछ शुरू से शुरू हो,
लेकिन अंत तक पहुँचते-पहुँचते हिम्मत हार जाते है
हमें कोई दिलचस्पी नहीं रहती
कि वह सब कैसे समाप्त होता है
जो इतनी धूमधाम से शुरू हुआ था
हमारे चाहने पर।

दुर्गम वनो और ऊँचे पर्वतों को जीतते हुए
जब तुम अंतिम ऊँचाई को भी जीत लोगे-
तब तुम्हें लगेगा कि कोई अंतर नहीं बचा अब
तुममें और उन पत्थरों की कठोरता में
जिन्हें तुमने जीता है -

अब तुम अपने मस्तक पर बर्फ का पहला
तूफान झेलोंगे पर कापोंगे नहीं

तब तुम पाओगे कि कोई फर्क नहीं
सब कुछ जीत लेने में
और अंत तक हिम्मत न हारने में।

''राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।'' - महात्मा गांधी

''पर्यावरण''

कु. शिवानी रावल
अप्रेंटिस
पुस्तकालय

धरती माँ को सुंदर बनाने के लिए 'पर्यावरण' ईश्वर का दिया हुआ एक बेहतरीन उपहार है ।

पर्यावरण यानी परि+आवरण ।

हमारे आस पास जितने प्राकृतिक तत्व है, जैस कि-हवा, पानी, प्रकाश, पेड़-पौधे, जंगल इत्यादि इन सब का समावेश पर्यावरण में होता है ।

ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है और जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है पर्यावरण ।

पर्यावरण, हमे स्वस्थ जीवन जीने के लिए शुद्ध जल, शुद्ध वायु, शुद्ध भोजन उपलब्ध करवाता है ।

एक शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन के लिए एक स्वच्छ वातावरण बहुत जरूरी है । लेकिन ये पर्यावरण कुछ मनुष्यों की कुछ लापरवाही के कारण दिन-प्रति-दिन बिगड़ता जा रहा है । यह एक ऐसा मुद्दा है जिसके बारे में सभी को सोच विचार करना चाहिए और विशेष रूप से युवाओ को इस विषय में आगे बढ़कर प्रयास करना चाहिए ।

वर्तमान समय में औद्योगिक कारखाने, कंपनियाँ, बढ़ती जा रही वाहनों की संख्या, विद्युत उपकरणों के उपयोग में बढ़ोतरी- इत्यादि कारणो की वजह से पर्यावरण को भारी मात्रा में नुकसान हो रहा है । इन सभी चीजों का उपयोग संपूर्ण रूप से रोका तो नहीं जा सकता है परंतु कम किया जा सकता है । हवामान को प्रदूषित करने वाले वायु के बदले प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग बढ़ाया जा सकता है ।

सरकार भी पर्यावरण को सुरक्षित रखने के मार्ग पर कार्यरत है । सरकार ने पर्यावरण नीति बनाई हुई है उसके अनुसार अनुच्छेद 48 A राज्य सरकार को निर्देश देता है कि वह पर्यावरण की सुरक्षा और उसमें सुधार सुनिश्चित कर, तथा देश के वनों तथा वन्यजीव की रक्षा करें । अनुच्छेद 51 A (जी) नागरिकों को उनके कर्तव्यों का बोध कराता है कि पर्यावरण की रक्षा तथा इसका सवर्धन करें ।

वर्तमान युग में पर्यावरण का संरक्षण एक महत्वपूर्ण कार्य बन चुका है । पर्यावरण का संतुलन बना रहे इसलिए हमें अभी से सावधानी बरतने की जरूरत है । जिससे हम इस पर्यावरण की खूबसूरती को यूँ ही बरकरार रख पाए ।

ईश्वर ने इस सुंदर सृष्टि की रचना की, अब इसकी सुंदरता को संभालना और इस सुंदरता में वृद्धि करने का कर्तव्य मनुष्य का है।

सृष्टि रूपी विशाल उपवन में अगर कोई फूल आप को पसंद आ जाए तो उसे तोड़ने के बदले उसे पानी देकर उसका सिंचन करें । यहीं है पर्यावरण के प्रति आपका योगदान और समर्पण ।

तो आइए, अब से हम सब यह प्रयास करें कि इस पर्यावरण को हम और ज्यादा सुंदर बना सके और हमारी धरती माँ की चुनरी को ज्यादा खूबसूरती से सजा सके ।

निर्भया

श्री हरीश एच. बचवाणी
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग

(निर्भया एक बेंच पर बैठी है)

हाय...मैं निर्भया...मम्मी पापा ने बड़े प्यार से रखा था ये नाम...क्योंकि मुझे कभी किसी चीज से डर नहीं लगता था । हमेशा हर चीज का मैं डटकर सामना किया करती थी...इसलिए मेरा नाम निर्भया रखा गया था । और क्या बताऊं आप सबको मैं...बहुत खुशमिज़ाज लड़की हूं मैं । (तभी एक आवाज़ आती है ''ओए'')....कौन है वहां ?....कौन है ?.....कौन हो आप लोग ? ....कौन हो ?.....छोड़ दो मेरा हाथ....छोड़ो मुझे....छोड़ो...(बेंच से नीचे गिर जाती है)....छोड़ो...जाने दो....जाने दो मुझे....(जोर से चीखती है और शांत हो जाती है । नेपथ्य से एक गंभीर संगीत उभरता है)...एक बात मुझे बतला दो.....मैं लक्ष्मी हूं ?..... या मनोरंजन का साधन.....अगर मैं लक्ष्मी हूं.... तो फिर गंदी नज़र क्यों ?.... उस दिन रात के आठ बजे थे...मैं अपने best friend के साथ movie देखने गई थी और बहुत खुश थी... Movie भी बहुत अच्छी थी... पर विलंब हो गया...इसलिए हमें टैक्सी नहीं मिली...तो हम बस में ही चढ़ गए.... वहां से शुरु होती है मेरी कहानी । वो कहानी...जो कभी कोई लड़की देखना या सुनना नहीं चाहेगी.... बस में चढ़ते ही मुझे कुछ अजीब-सा लग रहा था... तो मैंने अपने दोस्त को कहा कि ''यार, चल चलते हैं... अच्छा नहीं लग रहा'' ....तो जैसे ही मेरा दोस्त वहां गया तो उन लोगों ने उसे घेर लिया और तब तक मारा जब तक वो अधमरा नहीं हो गया । और फिर वो लोग मेरे पास आए और मेरे साथ जबरदस्ती करने लगे...मैं रोई...चिल्लाई.... भीख मांगी अपनी जिन्दगी की... कि मुझे छोड़ दो... जाने दो... पर किसी को सुनाई नहीं दिया... और फिर उन्होंने एक लोहे का रॉड लिया...और मेरे अंदर... बहुत दर्द हुआ... रोती रही.... बिलखती रही.... पर उनको सुनाई नहीं दे रहा था.... शायद उनके पास दिल नहीं था । मेरी आंतें बाहर निकल रही थीं....मुझे लगा कि मर चुकी हूं मै....कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था.... बस ठंड लग रही थी.... और फिर जब उनको लगा कि ये मरने वाली है .... तो पता है क्या किया ? .... फेंक दिया बीच सड़क पर मुझे .... उन्होंने उठाई मेरी अर्थी.... लाल चुनर से सजाना था और .... ओढ़ादी सफेद चादर.... रह गई अधूरी ख्वाहिशें उनकी.... टूट गए सपने मेरे .... टूट गए .... मगर आप लोगों ने दिया तो जलाया था ना मेरे लिए .... मोर्चे भी उठाए थे.... है ना .... पर क्या आप लोगों ने न्याय किया मेरे लिए .... ? .... कैसे ? .... मेरा नाम अखबारों में ना देकर ?.... यही है आप सभी का न्याय ?.... क्यों नहीं आया मेरा नाम.... क्योंकि आप लोगों को लगा कि मेरी इज्जत चली गई .... बलात्कारी वो थे .... बलात्कार मेरा हुआ .... लेकिन इज्जत मेरी गई .... कैसे ? .... मेरे पास तो अब भी वो संस्कार थे ना.... आपको दिखाई नहीं दिया.... । आज भी डर लगता है.... उन सब चीजों के बारे में सोचकर .... उनकी नजरें अब भी डराती है मुझे.... आप बचाएंगे मुझे उन नजरों से ? .... न वो दिल्ली का शहर था और न मैंने छोटा कपड़ा पहना था .... तो फिर मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ ? .... आखिर मेरी गलती क्या है ? .... लड़कों के साथ बाहर जाना .... रात में movie देखना या... मेरा लड़की होकर पैदा होना ..... क्या है मेरी गलती.... (धम्म से जमीन पर गिर पड़ती हैं)

ईमानदारी - एक जीवन शैली

कु. हनी खिलवानी
सुपुत्री श्री महेश खिलवानी
सहायक, नगर विकास स्कंध

प्रस्तावना

''मत करो अपनी आत्मा मैली, बनाओ ईमानदारी को अपनी जीवन शैली।''

ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है। ईमानदारी एक शक्ति है जिसमें भ्रष्टाचार को दूर करने और समाज के कई सामाजिक मुद्दो को हल करने की क्षमता है। संक्षिप्त में कहूं तो जीवन में ईमानदार होना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ईमानदारी बहुत सी समस्याओं को हल करती है और शान्ति व सफलता की ओर ले जाती है। ईमानदारी वह संपति है, जो ईमानदार व्यक्तियों को जीवन में बहुत अधिक विश्वास और सम्मान देती है। ईमानदार रहना कठिन है और शुरुआत में इससे लोगों को मुश्किल हो सकती है लेकिन बाद में इससे बेहतर ओर आराम महसूस होता है यह एक व्यक्ति को सहज और सरल जीवन शैली देती है और हर तरह के बोझ से मुक्त रखती है।

ऊपर लिखा हुआ स्लोगन या प्रस्तावना की आठ पक्तियां लिखने में जितनी सुंदर, अच्छी और आसान लगती है निभाने में उतनी ही मुश्किल है। आम तौर पर यह देखा गया है कि बेईमानी ईमानदारी पर अक्सर भारी पड़ती है। ईमानदार व्यक्ति बेईमान व्यक्ति के आगे बौना साबित होता है। इसी बेईमानी की वजह से ही आज समग्र राष्ट्र भ्रष्टाचार से त्रस्त है। ऐसा प्रतीत होता है बेईमानो ने अपने नागपाश में सबको कस रखा है। बेईमान चरित्र मकड़ी की तरह ज़मीर को और समाज को खोखला करता जा रहा है। हमे पता है हम जो कर रहे है वह गलत है पर हम एक भीड़ है जिस तरफ ज्यादा भीड़ देखते है उसी तरफ खिंचे चले जाते हैं। तभी तो बेईमानी का प्रमाण ज्यादा देखकर ईमानदार व्यक्ति भी बेईमानी की तरफ खिचा चला जाता है।

बेईमानी बढ़ने के कारण

1. हमारे देश की बदनसीबी है कि बिना रुपया दिये कोई काम नहीं होता है। अगर कोई रुपया लेना न चाहे तो भी हम उसे देते हैं क्यूंकि हममे सब्र की कमी हो गयी है। मतलब यहीं है कि बेईमानी आसमान ने नहीं टपकी है उसे हमने जन्म दिया है। आज हम- मंदिर में दर्शन के लिए, स्कूल अस्पताल में एडमिशन के लिए, ट्रेन में रिजर्वेशन के लिए, राशनकार्ड, लाइसेंस, पासपोर्ट वगैरह के लिए, नौकरी के लिए, रेड लाइट पर चालान से बचने के लिए, मुक़दमा जीतने के लिए, बैंक से लोन लेने के लिए, खेलो में खिलाड़ियों के चयन के लिए, साहित्य में पुरस्कार प्राप्त करने के लिए।

हम बेईमानी करके ही अपना उल्लू सीधा करते हैं।

बेईमान जीवन शैली का सबसे प्रमुख कारण है मनुष्य में असंतोष की प्रवृति। मनुष्य अपने वर्तमान से संतुष्ट नहीं हो पाता है। मनुष्य के नैतिक मूल्यों में भारी गिरावट आयी है। आज लोगों का चरित्र इतना कमज़ोर हो चुका है कि वह धन के लिए ऐशो आराम से जीने के लिए देखा-देखी एवं झूठे दिखावे के लिए, कम मेहनत से ज्यादा कमाने के लिए बेईमानी का सहारा लेता है। बच्चों को कानून पालन कैसे करना चाहिए वो नहीं सिखाते है पर कानून तोड़ने के बाद उससे कैसे बचा जाये वे सिखाया जाता है। लोग बेईमानी करके बड़ी रकम पाना चाहते है, बड़ा पद हथियाना चाहते हैं। बेईमानी और चमचागिरी करके कमाने वाली जगह पर ही अपना तबादला कराना चाहते हैं, सीवीसी गाईडलाईन्स की धज्जिया सरे आम उड़ाते हैं और ये सब हमारे देश के प्रशासन की खुली आँख के नीचे होता है। यहीं वजह है ईमानदार व्यक्ति या तो अंदर ही अंदर घुंटता रहता है या फिर वो भी बेईमानी का रास्ता अख़्तयार कर लेता है। यहीं वजह है आज नैतिक मूल्यो में भारी गिरावट आयी है और बेईमानी को बढ़ावा मिला है।

ईमानदारी भरी जीवन शैली जीने के लिए हमें क्या करना चाहिए

हमारा यह लक्ष्य हो – ईमानदारी को ब्रोडकास्ट करें, बेईमानो का पर्दाफाश करें,

हमें सही रास्ते का पालन करना चाहिए । इसे एक जिम्मेदारी के रूप में लेना चाहिए । बेईमानों से डरे बिना उनके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए । यह भी देखा गया है कि हम अपने घर में ही बेईमानी के बीज़ बो देते हैं पर उससे बचना चाहिए । बच्चो को अच्छी शिक्षा और अच्छे संस्कार देने चाहिए ।

आओ करे अपने घर से शुरूआत, बच्चों को दें ईमानदारी की सौगात ।

हमें यह पता होना चाहिए कि बेईमानी हमारे दिन का चैन और रात की नींद हराम कर देती है ।

बहुत जबरदस्त चीज़ है धन के पीछे भागने में ही हो जाता है निर्धन

तभी तो आज नीरव मोदी, विजय माल्या और न जाने कितने बड़े–बड़े नाम बेईमानी करके आज डर भरी जिंदगी जी रहे हैं और देश छोड़कर इधर–उधर भाग रहे हैं । बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है और आज नहीं तो कल उसका फल भुगतना ही पडता है । जबकि इसके उल्ट ईमानदारी से अपना जीवन व्यतीत करने वाला इन्सान चैन की नींद सोता है । उसे किसी बात से डर नहीं होता । यही वजह है ईमानदारी से जीवन शैली अपनाने से हम खुश रह सकते हैं, चैन से रह सकते हैं ।

ईमानदार जीवन शैली के फ़ायदें

1. ईमानदारी भरोसेमंद होने में हमारी मदद करती है क्योंकि ईमानदार लोगों पर दूसरे हमेशा विश्वास करते हैं ।
2. ईमानदारी जीवन में बहुत अधिक सम्मान दिलाती है ।
3. ईमानदार लोग एक बेईमान की तुलना में राहत के साथ आरामदायक जीवन जीते हैं ।
4. यह शांतिपूर्ण जीवन का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है और हमें परेशानियों से बाहर निकालता है ।
5. ईमानदारी हमें सरलता की ओर ले जाती है वहीं दूसरी और बेईमानी हमें दिखावे की ओर ले जाती है ।
6. ईमानदारी मजबूती और आत्मविश्वास लाती है ।
7. ईमानदार लोग आसानी से कल्याण की भावना विकसित कर लेते हैं ।
8. ईमानदारी से अच्छे मित्र बनते हैं, क्योंकि ईमानदारी सदैव ईमानदारी को आकर्षित करती है ।

शांतिपूर्ण जीवन के लिए ईमानदारी

ईमानदारी सरलता के बिना हो सकती है पर सरलता ईमानदारी के बिना कभी भी नहीं हो सकती है । बिना ईमानदारी के हम दो संसारों में रहते हैं, एक सच्चा संसार और अन्य दूसरा वह संसार जो हमने विकल्प के रूप में बनाया है । ईमानदार व्यक्ति जीवन के हरेक क्षेत्र में व्यक्तिगत, व्यवसाय, नौकरी, घर के रिश्तों वगैरह में समान जीवन जीता है । नीति का पालन करता है । इसी वजह से ईमानदारी हमें सरलता की ओर ले जाती है वहीं दूसरी और बेईमानी हमें दिखावे की ओर ले जाती है ।

निष्कर्ष

जीवन में अच्छा चरित्र, ईमानदारी को विकसित करने का कार्य करता है । एक अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति के पास किसी से भी छिपाने के लिए कुछ नहीं होता है इसलिए जैसे पहले कहा ईमानदारी हमे सरलता की ओर ले जाती है वहीं दूसरी ओर बेईमानी हमें दिखावे की ओर ले जाती है । इसलिए हमें अपने जीवन में ईमानदार बनने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि ईमानदारी हर सफलता की कुंजी होती है ।

आओ मिलकर हम प्रण लें, रखेंगे हम सदा सुरक्षित,
मातृभूमि की शान को, जिसका हमने नमक खाया है,
उस अन्नदाता की आन को, साधन है सहयोग हमारा और ईमानदारी है बल,
भारत देश की प्रगति हेतु ईमानदारी भरी जीवन शैली ही है एकमात्र हल ।

सत्यनिष्ठा - एक अनमोल खज़ाना

श्री प्रतीक भावनानी
सुपुत्र श्रीमती ज्योति एन. भावनानी,
सहायक, सा. प्र. विभाग

सत्यनिष्ठा इंसान के अंदर में छुपा हुआ वह अनमोल खज़ाना है जो अपने साथ अनेको गुणों को अपने साथ लिए चलता है। सत्यनिष्ठा के मार्ग पर चलने वाला इंसान गलत काम कभी कर ही नहीं सकता है। जिससे उसने परिवार, समाज या फिर देश को कोई हानि हो। सत्यनिष्ठा को धारण करने वाला इंसान स्वभाव से धीर और गम्भीर होता है, जिसे अपनी सारी जिम्मेदारियों का हरदम आभास रहता है। ऐसे व्यक्ति को अपने वतन से बेहद ही प्यार होता है। इसी प्रेम के कारण वह हमेशा अपने देश के बारे में अच्छा ही सोचता है। वह अपने देश के विकास एवं हितो हेतु हंमेशा सजग रहता है। उसके मन में अपने देशवासियों के प्रति मान-सम्मान रहता है। वह बिना किसी जाति भेद के सबसे भाईचारा निभाता है और सब के साथ मिल जुलकर रहता है। वह अपने देश की समस्याओं को खुद की समस्याँ मानकर उन समस्याओं का हल निकालने की कोशिश में जुटा रहता है। ऐसा इंसान अपने देश की शांति एवं समृद्धि हेतु सदैव प्रयत्नशील रहता है।

सत्यनिष्ठ व्यकित के मन में हमेशा संतोष का भाव रहता है। उसके पास जितना होता है वह उसमे हमेशा संतुष्ट रहता है। लालच तो कभी भी उसके मन को छु भी नहीं पाती है। ऐसा इंसान अपने घर में और समाज में हमेशा हँसी खुशी से अपना जीवन यापन करता है। ऐसे इंसान को हर जगह मान और सम्मान प्राप्त होता है।

जो इंसान सच्चाई की राह पर चलता है वह बहुत ही मेहनती होता है। वह बेकार की बातों में कभी भी अपना समय नष्ट नहीं करता है। वह समय के महत्व को बेहद ही अच्छी तरह से समझता है। वह लालच, ईर्ष्या, दगा तथा नफरत जैसे अवगुणों से हंमेशा दूर ही रहता है। वह न तो किसी से झगड़ा करके देश की शांति को भंग करने की कोशिश करता है और ना ही ऐसी हानिकारक चीजों जैसे कि शराब, सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, चरस, गांजा इत्यादि नशीली चीजों का सेवन करता है। न ही ऐसी चीजों के उत्पादन एवं वितरण में किसी प्रकार का साथ देता है। ऐसा व्यक्ति न तो किसी चीज़ों में मिलावट करके देश या देशवासियों को नुकसान पहुँचाता है और न ही धर्म और जाति के नाम पर कोई दंगा फसाद करके देश में अशांति का माहौल पैदा करता है।

सत्यनिष्ठा को अपनाने वाला व्यक्ति बेहद ही कर्तव्यनिष्ठ भी होता है। वह अपना हर एक कर्तव्य भली भाँति निभाता है। वह अपने घर, समाज एवं देश के प्रति हमेशा ही जागरुक रहता है और हर हाल में उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर रहता है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति सदैव देश और देश की सम्पति को अपने दिलो जान से संभालता है। वह कभी भी अपने देश या देश की सम्पति को नुकसान पहुँचाने की बात सपने में भी नहीं सोच सकता है।

सत्यनिष्ठा के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति हमेशा ईमानदारी के रास्ते पर चलता है। चाहे कैसा भी वक्त आए पर वह कभी भी ईमानदारी की राह को नहीं छोडता है। जिसके फलस्वरुप देश को कितनी ही मुश्किलो एवं सामाजिक बुराईयों का अपने आप ही अन्त होने लगता है। और देश तरक्की की ओर कदम बढ़ाने लगता है। और देश में चारो ओर व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय विकास होने लगता है। तो फिर देर किस बात की आईए मैं और आप सभी यह प्रण ले कि ''सत्यनिष्ठा को हर हाल में अपने जीवन में अपनाएँगे, अपने देश को ऊचाँईयों के शिखर पर पहुँचाएगे।

मृत्यु शय्या पर रावण ने लक्ष्मण को दी थी ये तीन महत्वपूर्ण सीख

सुश्री गीता त्रिपाठी
डी.ई.वी.ओ., ई.डी.पी. अनुभाग

इसमें कोई शक नहीं कि अपने समय में रावण जैसा पंडित पूरे संसार में नहीं था । राम भी संसार के इस नीति, राजनीति और शक्ति के महान पंडित की प्रतिभा से पूरी तरह अवगत थे । यही कारण है कि जब रावण मरणासन्न था । तब श्रीराम ने अपने भ्राता लक्ष्मण को रावण से सीख लेने के लिए भेजा । रावण ने लक्ष्मण को जो सीख दी वह आपके भी काम आ सकती है । रावण ने लक्ष्मण को कौन–सी तीन शिक्षाएं दी ?

जब श्री राम की बात सुनकर लक्ष्मण मरणासन्न अवस्था में पड़े रावण पास पहुंचे और उनके सिर के नजदीक जाकर खड़े हो गए । रावण ने कुछ नहीं बोला । लक्ष्मण जी वापस राम जी के पास लौटकर आ गए । राम ने लक्ष्मण को समझाया कि यदि किसी से ज्ञान प्राप्त करना हो तो उसके चरणों के पास खड़े होना चाहिए न कि सिर की ओर । तब लक्ष्मण रावण के पास पहुंचकर उनके पैरों के पास खड़े हुए । रावण ने लक्ष्मण को यह तीन शिक्षांए दी ।

1. पहली बात जो रावण ने लक्ष्मण को बताई वह ये कि शुभ कार्य जितनी जल्दी हो कर डालना और अशुभ को जितना टाल सकते हो टाल देना चाहिए यानी शुभस्य शीघ्रम् । मैं श्रीराम को पहचान नही सका और उनकी शरण में आने में देरी कर दी । इसी कारण मेरी यह हालत हुई ।
2. दूसरी बात यह कि अपने प्रतिद्वंदी, अपने शत्रु को कभी अपने से छोटा नहीं समझना चाहिए, मैं यह भूल कर गया। मैंने जिन्हें साधारण वानर और भालू समझा उन्होंने मेरी पूरी सेना को नष्ट कर दिया । मैंने जब ब्रह्माजी से अमरता का वरदान मांगा था तब मनुष्य और वानर के अतिरिक्त कोई मेरा वध न कर सके ऐसा कहा था क्योंकि मैं मनुष्य और वानर को तुच्छ समझता था । ये मेरी गलती हुई ।
3. रावण ने लक्ष्मण को तीसरी और अंतिम बात ये बताई कि अपने जीवन का कोई राज हो तो उसे किसी को भी नहीं बताना चाहिए । यह भी मैं चूक गया क्योंकि विभीषण मेरी मृत्यु का राज जानता था । ये मेरे जीवन की सबसे बड़ी गलती थी ।

''शब्द''

श्रीमती अंजू आहुजा
वरिष्ठ लिपिक
समुद्री विभाग

जुबाँ से निकले शब्द से खुशी,
जुबाँ से निकले शब्द से गम ।
जुबाँ से निकले शब्द से पीड़ा,
जुबाँ से निकले शब्द ही मरहम ।
जुबाँ से निकले शब्द की महिमा गजब,
जुबाँ से निकले शब्द की गरिमा गजब ।

जुबाँ से निकले शब्द महके तो लगाव,
जुबाँ से निकले शब्द बहके तो घाव ।
शब्द जैसे है चाबी, सही चुने तो जीत ले दिल,
और शब्द ही कर दे किसी का मुह बंद ।
जुबाँ की चुप्पी कभी–कभी बने मुख की मुस्कुराहट,
और जुबाँ से निकले शब्द कभी रच दे महाभारत ।

इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय

श्रीमती बीना खीमजी महेश्वरी
आगत-निर्गत सहायक
ईडीपी अनुभाग

इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प जीवन को सफल बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। जीवन के हर चरण और हर पेशे में इसकी आवश्यकता होती है। इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प दोनो ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। दृढ़ इच्छा शक्ति वाले व्यक्ति में दृढ़ संकल्प अवश्य ही मौजूद होता है।

ध्यान एक ऐसी विधी है जिससे हम अपनी एकाग्रता को बढ़ा सकते है। इसके निरन्तर अभ्यास से ये आपके मन को शांत रखता है, ताकि आप के दिमाग से बातें खत्म हो सके और आप अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित कर सके। आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं कि इसके कारण आप और अधिक एकाग्रचित्त होंगे जिस से आप अपने लक्ष्यों के प्रति दृढ़ संकल्प रहेंगे। दृढ़ शक्ति और संकल्प स्थाई नहीं होते है, इसके लिए आपको अपनी मानसिक और शारीरिक अंगो को हर तरीके से उपयोग में लाना आवश्यक है।

भाग्य खतरनाक होता है, यह आपके आत्मविश्वास को डगमगा कर और आपके लक्ष्य तक पहुंचने से आपको रोकता है। जिस क्षण आप अपने भाग्य पर विश्वास करने लगते है, वहीं पर आपका आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प पीछे की ओर हट जाता है। ऐसे में आपकी इच्छा शक्ति कुछ नहीं कर पाती जब आप अपने लक्ष्य को भाग्य पर छोड़ देते है।

किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प दोनों की आवश्यकता होती है। यदि आप के पास दृढ़ इच्छा जो इच्छा शक्ति और आत्मविश्वास आप अन्दर रखते है, वहीं आपको एक गो–गेटर के रूप में बदल देता हैं। आप जो भी लक्ष्य निर्धारित करेंगे, उसमें आने वाली सभी बाधाओं को पार कर उस लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त कर लेंगे और यहीं आपकी जीत है।

इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प ही तय करता है कि आप अपने जीवन में कितने सफल होंगे। यह बात स्पष्ट है कि आप अपनी क्षमताओं पर जितना अधिक दृढ़ विश्वास रखेंगे आपका आत्मविश्वास उतना ही अधिक बढ़ेगा। यही इच्छा शक्ति आपके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और आपको एक अद्‌भूत सफलता की ओर आगे बढ़ने में आपकी मदद करता हैं। जब तक इच्छा शक्ति दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास आपके हाथ में है, आपका आत्मविश्वास इस बात पर निर्भर है कि आप अपने लक्ष्य के प्रति कितने दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति रखते है। आपकी इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प आपके जीवन की सफलता के लिए बहुत आवश्यक हैं। फिर चाहे आप कामकाजी पेशेवर हो या फिर व्यापारी हो, आपको सफलता प्राप्त करने के लिए इस आत्मविश्वास और इच्छा शक्ति की बहुत आवश्यकता पड़ती हैं।

आप के द्वारा उपयोग की जाने वाली इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प ही आपकी सामाजिक स्थिति को सुधारती हैं। यदि आपका आत्मविश्वास सुदृढ़ है तो आपके दुश्मन भी आप की प्रशंसा करेंगें। अधिक लोग आपके बारे में बाते करेंगे और आपकी दृढ़ संकल्प की क्षमताओं का सम्मान करेंगे। आप जितने अधिक लोकप्रिय होंगे आपका आत्मविश्वास और बढ़ेगा और आप खुद अपने बारे में अच्छा महसूस करेंगे।

आपकी प्रतिबद्धता ही आपके दृढ़ संकल्प को मजबूत कर आपकी हार को भी स्वीकार करने के लिए तत्पर रहेगी। आपको यह भी याद रखना है कि आपको अपनी प्रतिबद्धता हमेशा बनाए रखनी है, क्योंकि प्रतिबद्धता हर दिन बदलती रहती है जो आपके लिए लक्ष्य प्राप्ति हेतु उचित नहीं है। केवल जब आप लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे तभी आप अपने दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति से जो आप पाना चाहते हैं आप उसे प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप में दृढ़ इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प है तो आप किसी भी कार्य को करने में असमर्थ नहीं होंगे।

कपड़े और जूट बैग को अपनाना है, प्लास्टिक को हटाना है।

प्रो. प्रशांत चंद्र महालानोबिस - ''भारतीय सांख्यिकी क्षेत्र के पिता''

श्री विजय अग्रावत
सांख्यिकीय प्रशिक्षु
यातायात विभाग

- प्रो. प्रशांत चंद्र महालानोबिस का जन्म 29 जून, 1983 को कलकत्ता में हुआ था। शिक्षित परिवार में जन्मे महालानोबिस ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कलकत्ता (कोलकात्ता) में प्राप्त की।

- 1912 में प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता में भौतिकी में ऑनर्स के साथ स्नातक होने के बाद, वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उच्च अध्ययन करने हेतु इंग्लैंड चले गए। 1915 में उनके कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय छोड़ने से ठीक पहले, उनके एक शिक्षक ने उनका सांख्यिकी से परिचिय कराया, जिससे उनकी सांख्यिकी में रुचि उत्पन्न हुई।

- भारत लौटे, पर उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज में भौतिकी पढ़ाने के लिए एक अस्थायी पद स्वीकार किया, और वे 1922 में वहाँ भौतिकी विषय के प्रोफेसर बन गए। परन्तु सांख्यिकी में गहन रुचि होने के कारण इस क्षेत्र में रिसर्च चालू रखा।

- 17 दिसंबर, 1931 को उन्होंने कलकत्ता के बारानगर में 'भारतीय सांख्यिकी संस्थान' की स्थापना की। 1959 में, इस संस्थान को एक मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित किया।

- उन्होंने एंथ्रोपोलॉजी (मनुष्य जाति का विज्ञान), मौसम विज्ञान और जीव विज्ञान की समस्याओं के लिए सांख्यिकी विधियों को लागू किया।

- उन्होंने एक सांख्यिकी पद्धति तैयार की जिसे फ्रैक्टाइल ग्राफिकल विश्लेषण कहा जाता है, जिसका उपयोग लोगों के विभिन्न समूहों की सामाजिक आर्थिक स्थितियों की तुलना करने के लिए किया जा सकता है।

- उन्होंने आर्थिक नियोजन, सामाजिक और आर्थिक विकास की समस्याओं में बहुत बड़ा योगदान दिया। उनके काम ने देश में मात्रात्मक अर्थशास्त्र में अनुसंधान, जनगणना और सर्वेक्षण के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक डेटा के संग्रह को प्रोत्साहित किया।

- उनके पास कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पोर्टफोलियों थे। उन्होंने 1947 से 1951 तक संयुक्त राष्ट्र के उप-आयोग 'नमूना संग्रह' के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और 1949 में भारत सरकार के मानद सांख्यिकीय सलाहकार के पद का कार्यभार संभाला।

- व्यापक सामाजिक आर्थिक आंकड़े उपलब्ध कराने के उद्देश्य से, उन्होंने 1950 में 'राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण' की स्थापना की और भारत में सांख्यिकीय गतिविधियों के समन्वय के लिए 'केंद्रीय सांख्यिकी संगठन' की भी स्थापना की। और वे 1955 से 1967 तक भारत के योजना आयोग के सदस्य भी थे।

- उनके इस योगदान के लिए उन्हें भारत का 'आधुनिक सांख्यिकी का पिता' माना जाता है। 1968 में भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया।

- भारत सरकार ने 2006 में उनके जन्मदिन, 29 जून को 'राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस' के रूप में मनाने का फैसला किया। उनकी मृत्यु 79 वर्ष की आयु में 28 जून, 1972 को कलकत्ता में हुई।

कर्म की धरा पर चूर होते मोती

सुश्री इशरावती यादव
हिन्दी अनुवादक
सामान्य प्रशासन विभाग

आइए कुछ ऐसे कर्म वीरों की बात करते हैं जो अपने कर्म की धरा पर अपनी पूरी श्रद्धा के साथ अपने कर्म को निभाया करते हैं परंतु उनकी निष्ठा और अपने कर्म के प्रति इमानदारी समाज देख कर भी अनदेखा कर देता है।

कहानी आरंभ :

राधिका सक्सेना (गाइनिक डॉक्टर) : ओहो! पापा आप नाश्ता कर लीजिए, मैं नाश्ता नहीं कर पाऊंगी अस्पताल में बहुत ही इमरजेंसी केस आ गया है मुझे अभी जाना होगा।

पापा : अरे बेटा थोड़ा नाश्ता तो कर लो ऐसे कैसे चलेगा, इस प्रकार से तो तुम्हारा ही स्वास्थ्य खराब हो जाएगा। पहले तुम डॉक्टर बनने की रेस में दौड़ रही थी और अब अपने पेशे में।

राधिका सक्सेना : पापा इमरजेंसी केस है, मुझे जाना ही होगा ओके बाय बाय।

पापा : बाय बेटा, अपना ध्यान रखना।

राधिका अस्पताल पहुँचती है और जल्दी जल्दी ऑपरेशन थिएटर की यूनिफॉर्म को पहनकर ऑपरेशन थिएटर में प्रवेश करती है ऑपरेशन 1 घंटे तक चलता है। ऑपरेशन थिएटर से बाहर आती है।

राधिका : बधाई हो ! आपको जुड़वा बेटे हुए हैं, मां की भी हालत ठीक है। आधे घंटे बाद आप उनसे मिल सकते हैं।

मरीज के घरवाले : धन्यवाद मैडम जी ! आपने हमारी बहू और बच्चे दोनों की जान बचा ली। कई डॉक्टरों ने कह दिया था कि मां और बच्चे दोनों को सही सलामत लाना काफी मुश्किल है परंतु आपने इस मुश्किल कार्य को कर दिखाया, लोग सच ही कहते हैं कि डॉक्टर भगवान का दूसरा रूप होता है।

राधिका : इट्स ओके, यह मेरा काम है मैंने मेरा काम किया, बाकी भगवान को धन्यवाद कीजिए।

राधिका दिन भर कई प्रसूति कराती है जो केस थोड़े कॉम्प्लिकेटेड होते हैं उन्हें भी वह अपने हुनर के साथ सहज ढ़ंग से करवाने की कोशिश करती हैं जिसमें उसे सफलता भी प्राप्त होती है। राधिका घर आती है।

राधिका : ओहो पापा आज मैं कितना थक गई, आज सच में बहुत काम था बहुत पेशेंट थे, कुछ-कुछ केस इतने कॉम्प्लिकेटेड थे कि मैं उसे कैसे सहज ढ़ंग से कर सकूं इस सोच में ही भगवान से प्रार्थना करते हुए मैं मेरे कर्म को करती रही।

पापा : बहुत शाबाश बेटा। तुम सच में एक बहुत अच्छी डॉक्टर हो अच्छा अब मेरी प्यारी बेटी आओ, साथ में खाना खाते हैं।

पापा और राधिका साथ में खाना खाते हैं और खाने की टेबल पर अपने दिन भर की सारी गतिविधियों के बारे में वह अपने पापा को अवगत कराती है और पापा उसके हर वाक्य पर उसकी तारीफ करते हैं और उसका मनोबल बढ़ाते हैं।

रोज की तरह आज भी राधिका अस्पताल जाती है तभी एक गर्भवती महिला उसके अस्पताल में आती है राधिका उस महिला की जांच करती है उसे समझ में आ जाता है कि इस महिला का केस काफी कॉम्प्लिकेटेड है फिर भी राधिका उस महिला की प्रसूति कराने का पूरा संभव प्रयास करती हैं परंतु प्रसूति के समय उस महिला को PPH कॉम्प्लिकेशन हो जाती है जिसकी वजह से राधिका के बहुत प्रयास करने के बावजूद भी उसकी ब्लीडिंग नहीं रुकती है और अंतत: गर्भवती

औरत की मृत्यु हो जाती है । इस बार जिस राधिका को लोग भगवान का दर्जा दिया करते थे आज वहीं लोग उसे जान से मार देना चाहते हैं उसे गालियां देते हैं । बिना यह सोचे कि क्या सच में राधिका कसूरवार है, लापरवाह है ।

राधिका रोते-रोते घर जाती है उसके पापा उसके आंसू देख कर व्याकुल हो जाते हैं और पूछते हैं क्या हुआ बेटा क्यों रो रही हो ? राधिका अपने पापा के गले लग जाती है और फूट-फूट कर रोने लगती है ।

राधिका : पापा आज तक जो लोग मुझे भगवान का दर्जा देते थे आज वहीं लोग मुझे इतना गलत समझ रहे है, मैंने बहुत कोशिश की, कि मैं उस औरत को बचा सकूं । मेरी कोई गलती नहीं है ! मेरी कोई गलती नहीं है ! पापा, मेरी कोई गलती नहीं है। राधिका रोते-रोते अपने पापा की गोद में सिर रखकर सो जाती है । सुबह होती है राधिका रोज की तरह तैयार होकर आज अस्पताल नहीं जाती अपने पापा के साथ चाय पीने के लिए अपने घर के गार्डन में बैठती है । (पडोस के कुछ लोग बातें करते हैं)

पड़ोसी : अरे! देखो कैसी डॉक्टर है बिचारी गर्भवती औरत को पैसों के लिए जान से मार दिया । मुझे तो लगता है जान बूझकर डॉक्टर केस को कॉम्प्लिकेटेड करते हैं ताकि मरीज से ज्यादा पैसे लिए जाए, अरे हाय लगे ऐसे डॉक्टरों को । (एक दिन जब उसके पापा बाजार जाते हैं तब लोग उन्हीं की तरफ इशारा करके कहते है)

राहधारी : अरे सक्सेना जी ! घूस देकर बेटी को डॉक्टरी करवाई थी क्या ? या फिर उसकी डिग्री ही फर्जी है ?

लोगों के तानों को सुन कर दिन प्रतिदिन राधिका का मनोबल टूटता गया वह जानती थी कि इसमें उसकी कोई गलती नहीं है, पर उन लोगों को कैसे समझाएं, लोग उसे तो ताने और गालियाँ देते ही थे, अब उसके पापा का भी जीना हराम कर दिया, उसके पापा कहीं भी जाते उन्हें भी घृणा की दृष्टि से देखते, ताने देते । यह सब राधिका से नहीं देखा जा रहा था, वह समाज के सामने अपनी बेगुनाही कैसे साबित करें, हालांकि उस गर्भवती महिला के केस की जाँच हो ही रही थी पर लोगों में इतना सब्र ना था कि उस महिला की रिपोर्ट आ जाए, उसकी मृत्यु किस कारण से हुई है ये मालूम पड़ सके । लोग पहले ही अपना निर्णय सुनाने लगे थे, राधिका के मनोबल पर दिन-प्रतिदिन आघात करने लगे थे ।

एक दिन राधिका का मनोबल इतना टूट गया था, कि उसे दिन रात सिर्फ उन लोगों की गालियाँ सुनाई देती थी, नफरत भरे चहरे दिखाई देते, उसकी मानसिक हालत इतनी बिगड़ गई थी कि वो अपने आप को ही कसूरवार समझने लगी, हत्यारिन समझने लगी । आखिरकार एक दिन उसने आत्महत्या कर लिया और समाज के निर्णायकों के लिए प्रार्थना पत्र छोड़ गई, जिसमें लिखा था -

'मेरी कोई गलती नहीं है मैंने उस महिला को नहीं मारा कृपया मेरे परिवार के लोगों को तंग मत करें, अगर आप मुझे कसूरवार समझते हैं तो लो मैं स्वयं अपने आप को सजा दे रही हूँ अपने आप को मिटा रही हूँ ।'

यू कर्म की धरा पर एक मोती चूर-चूर होकर बिखर गया यूं कहो मिट गया ।

जिन स्वास्थ्य कर्मियों ने कोरोना महामारी के समय कोरोना रूपी दानव के सम्मुख वीरता से उसके सामने खड़े होकर हमारी रक्षा की हमारी सेवा में दिन-रात लगे रहे उन स्वास्थ्य कर्मियों को कई बार उनकी गलती ना होने के बावजूद भी उन्हें मारा-पीटा जाता है गाली-गलौज की जाती है कई बार उन्हें इतना तंग किया जाता है कि वह आत्महत्या तक कर लेते हैं । जरा सोचिए अगर यूं ही चलता रहा तो कुछ ही सालों में स्वास्थ्य के क्षेत्र को अपना कर्म क्षेत्र चुनने वाला कोई नहीं बचेगा । अभी समय है इन मोतियों को संभाल लीजिए अन्यथा यह धरती मोती शून्य हो जाएगी ।

राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

धारा 3(3) के तहत आने वाले कागजात (ये कागजात द्विभाषी रुप में जारी किये जाएँ) :-

1. संकल्प (Resolution), 2. साधारण आदेश (General Orders) - [परिपत्र–Circular, कार्यालय आदेश – Office Orders, प्रशासनिक अनुदेश – Administrative Instructions इत्यादि], 3. नियम (Rules), 4. अधिसूचना (Notifications), 5. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other Reports), 6. प्रेस विज्ञप्ति (Press Communiques)–(सभी प्रकार के विज्ञापन/All Advertisements), 7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जानेवाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (Administrative or other reports laid down before one house or both houses of the Parliament), 8. संसद के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले सरकारी कागज–पत्र (Official Papers laid down before the Parliament), 9. संविदा (Contracts), 10. करार (Agreements), 11. अनुज्ञप्ति (Licence), 12. अनुज्ञापत्र (Permit), 13. सूचना (Notice), 14. निविदा–प्रारूप (Tender Forms)

महत्वपूर्ण नोट :

1. उपर्युक्त सभी दस्तावेज अंग्रेजी में जारी न किए जाएं बल्कि द्विभाषी अर्थात् हिंदी एवं अंग्रेजी में साथ–साथ जारी किए जाएं।

2. राजभाषा नियम 1976 के नियम–6 के अनुसार अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

:: क्षेत्रवार वर्गीकरण ::

'क्षेत्र क' : बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

'क्षेत्र ख' : गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली।

'क्षेत्र ग' : ऊपर 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के अलावा अन्य सभी राज्य।

प्लास्टिक है जान लेवा, इसका उपयोग बंद करें।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान उपलब्धियों की झलकियाँ

नराकास राजभाषा शील्ड योजना वर्ष 2020 के अंतर्गत दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को नौभार प्रहस्तन के क्षेत्र में श्रेष्ठ महापत्तन के रूप में 'अंतर्राष्ट्रीय समुद्र मंथन एवार्ड 2021' प्राप्त हुआ ।

'क्वालिटी मार्क एवार्ड' के 10वें संस्करण में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को वर्ष 20-21 में 117 एमएमटी नौभार प्रहस्तन के फलस्वरुप 'समुद्री सेवाओं में अग्रणी उद्योग' के रूप में सम्मानित किया गया ।

नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस 2021 के भव्य समारोह में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री संजय कुमार मेहता जी ने वर्ष 2020-21 के लिए 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' ('ख' क्षेत्र में तृतीय पुरस्कार) प्राप्त किया ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को सोनमर्ग (जम्मू-कश्मीर) में एक समारोह में 2020-21 के दौरान बंदरगाह में सुरक्षा की उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए 'ग्रीनटेक इफेक्टिव सेफ्टी कल्चर एवार्ड' 2021 से सम्मानित किया गया ।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लहरों का राजहंस

22वाँ अंक
जुलाई, 2021 - दिसम्बर, 2021

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

दिनांक 26 नवंबर 2021 को गांधीनगर में पश्चिम क्षेत्र के लिए प्रधानमंत्री–गतिशक्ति योजना पर आंचलिक सम्मेलन का उद्घाटन, माननीय केन्द्रीय पत्तन, पोतपरिवहन एवं जलमार्ग तथा आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया । इस अवसर पर माननीय मुख्य मंत्री – गुजरात श्री भूपेन्द्र पटेल जी, माननीय केन्द्रीय पत्तन, पोतपरिवहन एवं जलमार्ग राज्य मंत्री श्रीपद नाइक जी आदि महानुभाव भी उपस्थित रहे ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)